सांध्य दैनिक 4PM

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK

• वर्षः 7 • अंकः 302 • पृष्ठः 8 • लखनऊ, गुरुवार, 9 दिसम्बर, 2021

मूल्य ₹ 3/-

अगर आप केवल भविष्य के बारे में सोचते रहेंगे तो वर्तमान भी खो देंगे

-गुरु गोबिंद सिंह

चुनाव से पहले लाल रंग पर खिंची तलवारें... 8 | जयंत-अखिलेश की जोड़ी पश्चिमी... 3 | गुल होने वाली है भाजपा की... 7

क्या सच में नाराज हैं केशव मौर्य के समर्थक

मुख्यमंत्री न बनाए जाने से नाराज चल रही हैं पिछड़ी जातियां

डिप्टी सीएम की उपेक्षा के चलते संगठन में भी ऊहापोह की स्थिति

आज छह बजे देखिये ज्वलंत विषय पर चर्चा हमारे यू ट्यूब चैनल 4PM News Network पर

» चुनाव से पहले की रैलियों में भीड़ न जुटने से चिंतित हैं भाजपा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी में 2022 के विधानसभा चुनाव की प्रक्रिया शुरू होने में अब चंद महीने से भी कम का समय है। अगले माह से आचार संहिता लगनी तय है। ऐसे में भारतीय जनता पार्टी जातिगत समीकरणों को हर तरह से दुरुस्त कर लेना चाहती है। मगर भाजपा के माथे पर चिंता की लकीरें बढ़ गई है क्योंकि केशव प्रसाद मौर्य को मुख्यमंत्री न बनाए जाने से पिछड़ी जातियां नाराज चल रही हैं। डिप्टी सीएम के समर्थकों में खासी नाराजगी है।

यही नहीं, डिप्टी सीएम की उपेक्षा के चलते संगठन में भी ऊहापोह की स्थिति हैं। हकीकत यह है कि चुनाव से पहले की रैलियों में भीड़ न जुटने से भाजपा टेंशन में है। मार्च 2017 में हुए विधानसभा चुनाव में मौर्य भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और मुख्यमंत्री पद के दावेदार थे, उन्हें मुख्यमंत्री न बनाए जाने पर पिछड़ी जातियां अब तक नाराज चल रही हैं। मौर्य अक्सर कहते भी हैं कि अपेक्षाओं को मैं गलत नहीं मानता। यूपी में सपा, बसपा और कांग्रेस ने पिछड़े वर्ग के लोगों को वह सम्मान नहीं दिया है जो भाजपा ने दिया है। माना जाता है कि यूपी में ओबीसी वोटरों की संख्या सबसे ज्यादा 54 फीसदी है। वहीं 2017 में पार्टी के 312 विधायकों में से 101 पिछड़ी जाति के जीते थे। सरकार में ओबीसी नेताओं को पर्याप्त तवज्जो न दिए जाने और आरक्षण, जातिगत जनगणना जैसी मांगों पर पिछड़े वर्ग में खासी नाराजगी है। यही वजह है कि विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा सरकार पिछड़े वर्ग को लुभाने में जुट गयी है।

"2017 में मेहनत प्रदेशाध्यक्ष ने की और मुख्यमंत्री योगी को बना दिया गया। केशव खुलकर कहे भले ना, मगर वो ही नहीं, उनके समर्थक खासे नाराज हैं। 2022 में यही पिछड़ा व ओबीसी समाज भाजपा को नकार देगा।

-शुचि विश्वास, प्रवक्ता कांग्रेस

"पिछड़ा समाज शुरू से सपा के साथ हैं। 2017 में बहक गया था। 2022 में भाजपा के झूठ का पर्दाफाश करेगा। सपा व गठबंधन को अपना अमूल्य वोट देगा ताकि अखिलेश यादव समाज का भला कर सके।

-डॉ. आशुतोष, प्रवक्ता सपा

"भाजपा ने कभी पिछड़ों को तवज्जों नहीं दिया। केंद्र में मंत्री बनाकर जो दांव खेला वह आगामी चुनाव में उल्टा पड़ेगा। डिप्टी सीएम की उपेक्षा 2022 के चुनाव में भाजपा को सत्ता से बेदखल कर देगा।

-रोहित अग्रवाल, प्रवक्ता आरएलडी

"इस सरकार में पिछड़ों पर अत्याचार इतना बढ़ गया है कि वे खौलते दूध की तरह उबल रहे हैं। वे 2022 का इंतजार कर रहे हैं। बदलाव के लिए तैयार बैठे हैं। केशव के अपमान का बदला चुनाव में पिछड़ा समाज लेगा।

-रोहित श्रीवास्तव, प्रदेश उपाध्यक्ष आप

चर्चा में यह बयान-

सीएम कौन बनेगा भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व तय करेगा

सीएम योगी आदित्यनाथ और डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के बीच दूरी की खबरें कोई नई नहीं हैं। मौर्य ने कुछ दिनों पहले कहा कि विधानसभा चुनाव के बाद कौन सीएम बनेगा ये केंद्रीय नेतृत्व तय करेगा। इसके बाद बीजेपी के इन दोनों दिग्गज नेताओं के बीच इस दूरी की चर्चा चुनाव से पहले और तेज हो गई है। मौर्य के समर्थक भी चाहते हैं कि इस बार सीएम पद का चेहरा केशव मौर्य को पहले से घोषित कर दिया जाए।

आखिर दिल्ली में पीएम मोदी से क्यों मिले डिप्टी सीएम केशव

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य पीएम मोदी के खास माने जाते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से संसद भवन में जब से मुलाकात की है तब से सियासी गलियारों में ये चर्चा है कि आखिर दिल्ली में पीएम मोदी से डिप्टी सीएम मिलने क्यों गए। हालांकि मुलाकात के बाद केशव मौर्य ने कहा कि प्रधानमंत्री का गरीब कल्याण का एजेंडा है। गांव के विकास का एजेंडा है। उन्होंने कहा हम लोग चाहते हैं कि गरीबों का कल्याण हो, वे आगे बढ़ें।

अब छड़ी चलाएंगे राजभर पार्टी को मिला सिंबल

» अभी भाजपा व विरोधियों पर छोड़ रहे हैं जुबानी तीर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव के मद्देनजर अखिलेश यादव के साथ धुआंधार चुनाव प्रचार में जुटे ओमप्रकाश राजभर अपने राजनीतिक विरोधियों खासकर भाजपा पर जमकर जुबानी तीर छोड़ रहे हैं। अब वे इसके साथ छड़ी भी चलाएंगे। चुनाव आयोग ने उनकी सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी को चुनाव चिन्ह छड़ी आवंटित कर दिया है। सुभासपा अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर ने आज सुबह एक ट्वीट के जरिए इसकी जानकारी दी है। गौरतलब है कि इस चुनाव के लिए राजभर की पार्टी ने समाजवादी पार्टी से गठबंधन किया है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव के साथ और अलग से वे लगातार जनसभाएं कर रहे हैं। इन जनसभाओं में वे जमकर भाजपा और उसके नेताओं पर जुबानी हमले बोल रहे हैं। वाराणसी पहुंचे राजभर ने केंद्र और प्रदेश सरकार पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि सरकार को किसानों का दुख-दर्द दिखाई नहीं दे रहा है। उन्होंने कहा विश्वनाथ कॉरिडोर का निर्माण होने से गरीबों का कोई भला नहीं होने वाला है। राजभर ने दावा किया कि 2022 में भाजपा का पतन तय है।

संसद में राजनाथ बोले-हेलिकॉप्टर दुर्घटना की त्रि-सेवा जांच के आदेश दे दिए

» संसद में रक्षामंत्री ने बताया पूरा घटनाक्रम

» बोले- त्रिस्तरीय जांच की हो चुकी है शुरुआत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। तमिलनाडु के कुन्नूर में हादसे का शिकार हुए एमआई-17 में देश के पहले सीडीसी जनरल बिपिन रावत का निधन हो गया। इसके अलावा उनकी पत्नी मधुलिका समेत 12 लोगों की भी जान चली गई। आज संसद के दोनों सदनों में रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने बयान दिया। लोकसभा में रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि जनरल रावत अपने तय दौरे पर थे। बुधवार को 11:48 पर एमआई-17 हेलीकॉप्टर से उड़ान भरी। एयर ट्रैफिक कंट्रोल ने लगभग 12:08 बजे अपना नियंत्रण खो दिया।

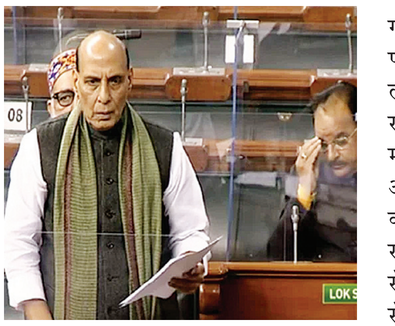

स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना प्रशासन को दी। तत्काल स्थानीय प्रशासन का बचाव दल घटनास्थल पर पहुंचा और राहत बचाव कार्य में जुट गया। उस अवशेष से जितने भी लोगों को निकाला गया, उन्हें वेलिंगटन के सैन्य अस्पताल पहुंचाया गया। हादसे में 14 में से 13 लोगों का वहीं पर निधन हो गया। राजनाथ सिंह ने बिपिन रावत, उनकी पत्नी मधुलिका रावत और 11 सैन्य अधिकारियों की मौत पर संवेदना प्रकट की। लोकसभा में बयान देते हुए रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि भारतीय वायु सेना ने सैन्य हेलिकॉप्टर दुर्घटना की त्रि-सेवा जांच के आदेश दे दिए हैं। जांच का नेतृत्व एयर मार्शल मानवेंद्र सिंह करेंगे। कल ही जांच टीम वेलिंगटन पहुंचकर जांच शुरू कर दी है। हादसे पर लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला ने भी दुख जताया। हेलीकॉप्टर हादसे में निधन हुए पदाधिकारियों के परिजनों के प्रति मैं अपनी संवेदना प्रकट करता हूं।

कमल खिलाएंगे तो ही होगा यूपी का आर्थिक विकास : केशव मौर्य

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। चुनाव 2022 से पहले प्रदेश में सियासी सरगर्मी तेज हो गई है। मतदाताओं को लुभाने के लिए सभी राजनीतिक दलों के स्टार प्रचारक लगातार रैलियां और जनसभाओं को संबोधित कर रहे हैं। इसी क्रम में बिजनौर पहुंचे डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने विपक्ष पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने अपनी सरकार में सरकारी पैसे की बंदरबाट की थी। जबकि पीएम सम्मान निधि देश के 10 करोड़ लोगों को दी जा रही हैं।

केशव मौर्य ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि बीजेपी एक ऐसी पार्टी है जो सबका साथ सबका विकास के साथ काम कर रही है। नरेंद्र मोदी के सात सालों के कार्यों की तुलना कांग्रेस के 60 साल के कार्यकाल से की जाएगी। हम जनता और देश की सेवा के लिए बने हैं। विपक्ष पर प्रहार करते हुए कहा कि ये लोग अपनी तिजोरी भरने में लगे हैं। पीएम सम्मान निधि देश के 10 करोड़ लोगों को दी जा रही हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने अपनी सरकार में सरकारी पैसे की बंदरबाट की थी। डिप्टी सीएम ने जनता को संबोधित करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश में आप अगर कमल का फूल खिलाएंगे तो विकास का काम होगा। 2017 में कमल का फूल खिलने से पहले उत्तर प्रदेश के हालात क्या थे? ये आप सभी को पता है. सभी प्रकार के माफिया यहां पर सक्रिय थे। आप लोगों ने जब उत्तर प्रदेश में बीजेपी सरकार चलाने का अवसर दिया तो ये माफिया या तो उत्तर प्रदेश छोड़कर चले गए या तो जेल चले गए। यूपी में जहां कानून व्यवस्था के तहत गुंडे माफियाओं पर शिकंजा कसा गया।

राहुल और प्रियंका पर लगाया यह आरोप

सबका साथ सबका विकास यह भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा की विजय है। जबकि प्रियंका गांधी और राहुल गांधी लगातार तुष्टिकरण की राजनीति कर रहे हैं। शिव भक्त जो कांवर लेकर जा रहे हैं उन पर लाठी बरसाने का काम इन लोगों ने किया है। अब जब कांवरिये कांवर लेकर निकलते हैं तो बीजेपी सरकार में उन पर फूलों की वर्षा होती है। प्रभु राम की पवित्र भूमि अयोध्या में हम होली मनाते हैं। हम भेदभाव के साथ नहीं विकास के साथ काम कर रहे हैं। इस दौरान प्रयागराज कुंभ का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि प्रयागराज कुंभ के स्नान में 24 करोड़ लोग आए थे।

पीएम ने गरीबों के लिए खोल रखा है खजाना

पीएम मोदी की तारीफ करते हुए डिप्टी सीएम ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री ने गरीबों के लिए खजाना खोल दिया। देश में अब भी बहुत सारे ऐसे लोग है जिनके पास रहने के लिए मकान नहीं थे। आजादी के बाद गांव में बिजली पहुंच गई। पहले की सरकारों राज में गरीबों के घरों में चूल्हा नहीं जलता था जबकि अब ऐसा नहीं है। हम हिंदू मुसलमान का भेदभाव नहीं करते हमने सब के विकास के साथ-साथ सबको योजनाओं का लाभ पहुंचाने का काम किया है। जबकि अन्य सरकारें में सिर्फ अपनी समाज के लोगों को योजनाओं का लाभ दिया जाता था।

छोटे दुकानदारों का समर्थन करें : वरुण

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

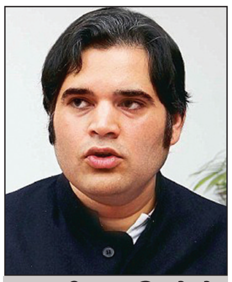

» बड़ी कंपनियों के बजाए पड़ोस के छोटे दुकानदारों से करें खरीदारी

पीलीभीत। भाजपा सांसद वरुण गांधी ने अपने ट्वीट के माध्यम से छोटे दुकानदारों, व्यापारियों और घरेलू उत्पादकों से जुड़ने का प्रयास किया। अपनी ही सरकार को घेरते हुए महंगाई और भ्रष्टाचार के मुद्दे भी छेड़े। उन्होंने कहा कि ऑनलाइन कंपनियों के बजाए अपने पड़ोस के छोटे दुकानदारों से खरीदारी करके उनका साथ दीजिए।

उन्होंने कहा कि महंगाई, भ्रष्टाचार और आर्थिक नीतिगत अव्यवस्था के कारण बड़ी संख्या में छोटे उत्पादक और दुकानदार अपना काम धंधा बंद करने पर मजबूर हो गए। ऐसी स्थिति में ऑनलाइन कंपनियों के बजाए अपने पड़ोस के छोटे दुकानदारों से खरीदारी करें। देश मजबूत बनेगा क्योंकि जब वैश्विक आर्थिक मंदी का दौर था तब इन छोटे दुकानदारों और उत्पादकों ने देश की अर्थव्यवस्था को संभाला था। बताते चलें कि इससे पहले सांसद वरुण गांधी ने किसानों और युवाओं के दर्द से जुड़ने का प्रयास किया था। वह लगातार किसानों के मुद्दों पर ट्वीट करते रहे हैं। इसी महीने उन्होंने बेरोजगारी के मुद्दे को छेड़ते हुए दो बार खाली पड़े पदों पर भर्ती न होने का मुद्दा उठाया था। युवाओं के दर्द से भी जुड़ने की कोशिश की थी।

निर्माणाधीन परियोजनाओं को समय से पूरा करें : तिवारी

» बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे की एक साइड पर 31 दिसंबर से फर्राटा भरेंगे वाहन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में विधान सभा चुनाव से पहले योगी आदित्यनाथ सरकार तमाम परियोजनाओं के काम में तेजी लाकर जल्द पूरा करा देना चाहती है। इनमें सरकार की प्राथमिकता में शामिल बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे का लोकार्पण इसी महीने का लक्ष्य तय है। दावा भी किया गया है कि 31 दिसंबर तक एक्सप्रेसवे की एक साइड यातायात के लिए खोल दी जाएगी, जबकि दोनों साइड 30 अप्रैल तक शुरू होंगी।

उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव आरके तिवारी ने लोकभवन में आयोजित प्रोजेक्ट मानीटरिंग ग्रुप की बैठक में विभिन्न परियोजनाओं की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि निर्माणाधीन परियोजनाओं को समय से पूरा करने के लिए काम को गति दें। बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे का एक साइड यातायात के लिए 31 दिसंबर तक खोला जाना है। बाकी काम को तेजी से पूरा किया जाए। डिफेंस कारिडोर की समीक्षा में उन्होंने लखनऊ नोड में लैंडबैंक बढ़ाने के साथ ही गंगा एक्सप्रेसवे के प्रस्तावित शिलान्यास के लिए सभी तैयारियां समय से पूरा कराने पर जोर दिया। परियोजनाओं का प्रस्तुतीकरण करते हुए उत्तर प्रदेश एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीडा) के मुख्य कार्यपालक अधिकारी अवनीश कुमार अवस्थी ने बताया कि एक्सप्रेसवे का निर्माण निर्धारित टाइमलाइन के अनुसार किया जा रहा है। बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे की एक साइड 31 दिसंबर तक और दोनों साइड 30 अप्रैल, 2022 तक यातायात के लिए खोल दी जाएंगी। गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे का काम भी तेजी से चल रहा है।

कांग्रेस का घोषणा पत्र झूठा : मोहसिन रजा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

» प्रियंका गांधी यहां पर घूमने फिरने आती और फिर चली जाती हैं

लखनऊ। यूपी सरकार के मंत्री मोहसिन रजा ने कांग्रेस द्वारा महिलाओं के लिए जारी किए गए घोषणा पत्र पर तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस यूपी में लुप्तप्राय है। उनका घोषणा पत्र झूठा है। प्रियंका गांधी वाड्रा यहां पर घूमने फिरने आती हैं और फिर चली जाती हैं। रजा ने कहा कि पहले प्रियंका गांधी वाड्रा ये बताए कि वे उत्तर प्रदेश में कहां से चुनाव लड़ेंगी।

यहां तो कांग्रेस लुप्त हो चुकी है। निजी स्वार्थ के लिए अपने परिवार को बचाने के लिए यहां वे बार-बार आती हैं और घूमकर चली जाती हैं। उनके झूठे वादों में कोई नहीं आने वाला है। बता दें कि कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर महिलाओं के लिए चुनावी घोषणापत्र जारी किया। यूपी में कांग्रेस की सरकार बनने पर सरकारी बसों में मुफ्त यात्रा, आंगनबाड़ी व आशा वर्कर्स को 10 हजार रुपये मानदेय और बुजुर्ग व विधवा महिलाओं को 1000 रुपये मासिक पेंशन देने का वादा किया।

अपनी बात रख सरकारी तंत्र को जवाबदेह बनाइए : नितिन अग्रवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। विधानसभा उपाध्यक्ष नितिन अग्रवाल ने कहा कि विधानसभा की समितियों में सत्ता और विपक्ष में भेदभाव नहीं होता है, सदन में सभी मिलकर एक पक्ष होते है। अग्रवाल ने विधानसभा की प्रश्न एवं संदर्भ, आवास संबंधी संयुक्त समिति, विशेषाधिकार व विधान पुस्तकालय समिति की बैठक ली। उन्होंने कहा कि समितियों के सभी सदस्य मर्यादा में अपनी बात कहकर सरकारी तंत्र को जवाबदेह बना सकते हैं।

उपाध्यक्ष विधान सभा ने समिति के सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि विधान सभा की समितियां सदन का लघु स्वरूप होती हैं। जिस प्रकार सदन चलता हैं उसी प्रकार समितियां भी अपना कार्य संचालन करती है। विधान सभा के विशेषाधिकार इन समितियों में भी लागू होते है। विधानसभा उपाध्यक्ष ने कहा कि सदस्य शासन के अधिकारियों के साथ तर्क के साथ प्रस्तुत विषय की गंभीरता पर विचार करते है।

बामुलाहिजा
कार्टून: हसन जैदी

जाग रहा है भारत का स्वाभिमान, असंभव कार्य भी हो रहे संभव : कृष्ण गोपाल

» भावी पीढ़ी को अवगत कराए राष्ट्रधर्म

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कानपुर। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल ने कहा कि भारत बदल रहा है और भारत का स्वाभिमान जाग रहा है, उसका परचम पूरे विश्व में दिख रहा है। राष्ट्रहित के जिन कार्यों को असंभव माना जाता था, वो सभी संभव होते दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने यह विचार कानपुर प्रांत के 36 संगठनों के प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक में प्रकट किए।

बैठक के प्रथम सत्र में सह सरकार्यवह कृष्ण गोपाल ने सभी संगठनों के कार्य के बारे में जानकारी कार्यकर्ताओं से ली। अमृत महोत्सव अभियान में आयोजन समिति के सहयोग के बारे में जानकारी की। उन्होंने कहा कि अमृत महोत्सव हमारे लिए केवल आजादी के 75 वर्ष मनाने का अवसर नहीं है बल्कि यह स्मरण करने का है कि आजादी का 75वां वर्ष हम सबको कैसे प्राप्त हुआ। देश में स्वतंत्रता ऐसे अनगिनत गुमनाम शहीदों के कारण प्राप्त हुई है, जिनका हम स्मरण ही नहीं कर पाए हैं। प्रत्येक गांव, प्रत्येक जाति ने स्वतंत्रता संग्राम में अपनी आहुति दी है। यह अवसर है जब हम ऐसे बलिदानियों की श्रृंखला से भावी पीढ़ी को अवगत कराए। वे जाने कि स्वतंत्रता सामान्य नहीं है या स्वतंत्रता कैसे प्राप्त हुई है, इसके लिए कितने त्याग और बलिदान किए गए हैं। यह हम सबको मिलकर करना है। उन्होंने कहा इस पावन यज्ञ में हमारी आहुति अवश्य होनी चाहिए, आने वाली पीढ़ी को देश और उसके गौरव, पूर्वज और श्रद्धा स्थल का स्मरण हमेशा रहे।

यूपी के सिंघासन तक पहुंचाएगा सपा-आरएलडी का गठबंधन

जयंत-अखिलेश की जोड़ी पश्चिमी यूपी में उगाएगी नया सूरज

राष्ट्रीय लोक दल ने जिसे दिया समर्थन, उसी की बनी सरकार

- » दोनों दलों ने एक साथ मिलकर पश्चिमी यूपी में रैलियों के जरिए शुरू किया माहौल बनाना
- » हर चुनाव में नए सहयोगी संग नजर आती है आरएलडी

दिव्यभान श्रीवास्तव

लखनऊ। सपा-आरएलडी का गठबंधन यूपी चुनाव में नई इबारत लिखेगा। जयंत-अखिलेश की युवा जोड़ी पश्चिमी यूपी में नया सूरज उगाएगी। मेरठ रैली से दोनों दलों को ऐसे संकेत मिल गए हैं। मेरठ में सपा प्रमुख अखिलेश यादव और आरएलडी नेता जयंत चौधरी ने साझा रैली निकाली। दबथुआ में इस परिवर्तन संदेश रैली से गठबंधन का ऐलान हो गया। फिलहाल उत्तर प्रदेश की सियासत में आरएलडी प्रमुख जयंत चौधरी के सामने अपने बाप-दादा की ढहती सियासी विरासत को बचाने की चुनौती है। ऐसे में जयंत चौधरी ने सपा प्रमुख अखिलेश यादव के साथ मिलकर चुनावी मैदान में उतरने का फैसला किया है।

सूबे में आरएलडी पहली बार किसी से गठबंधन कर चुनाव में नहीं उतर रही है बल्कि बीजेपी से लेकर कांग्रेस और बसपा सहित सभी प्रमुख दलों के साथ हाथ मिला चुकी है। ऐसे में देखना है कि 2022 के यूपी चुनाव में अखिलेश-जयंत की जोड़ी क्या सियासी गुल खिलाती है? पश्चिमी यूपी के जाटलैंड में सियासी आधार माने जाने वाली आरएलडी के सितारे भले ही आज गर्दिश में हों, लेकिन एक दौर में किंगमेकर की भूमिका अदा करती रही है। माना जा रहा है कि सीट शेयरिंग में आरएलडी को 32 से 36 सीटें मिल सकती हैं। जयंत-अखिलेश ने एक साथ मिलकर पश्चिमी यूपी में माहौल बनाना भी शुरू कर दिया है। चौधरी अजीत सिंह ने सियासत में अपने पिता चौधरी चरण सिंह की उंगली पकड़कर एंट्री की थी। साल 1980 में अजीत सिंह ने सियासी पारी का आगाज किया थाञ चौधरी चरण सिंह के निधन के बाद 1987 में वो लोकदल के अध्यक्ष बने और 1988 में जनता पार्टी के अध्यक्ष घोषित किए गए। 1989 में अजित सिंह यूपी के मुख्यमंत्री बनते-बनते रहे गए। 1999 को छोड़ दें तो अजीत सिंह 1989 के बाद बागपत से लगातार 2014 तक सांसद रहे। जनता दल से अलग होकर चौधरी अजीत सिंह ने 1996 में आरएलडी का गठन किया।

> “हमने पहले भी साथ काम किया है और हमारा एक पुराना रिश्ता है। दोनों ही पार्टियों के कार्यकर्ताओं में मेल है। पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के पास अनुभव की कमी नहीं है। विपक्ष में रहकर हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। साथ मिलकर चलेंगे तो ताकत बढ़ेगी। भाजपा ने जिस तरह प्रदेश को बर्बाद किया है। 2022 में किसान उसका बदला लेंगे। किसानों का हक जिसने मारा, सरकार उसकी ज्यादा दिन नहीं चली।
>
> - जयंत चौधरी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, आरएलडी

> “2022 बदलाव की नई कहानी लिखेगा। मेरठ की क्रांतिकारी धरती ने चौधरी चरण सिंह जैसे लोगों को जन्म दिया है, जिन्होंने हमेशा किसानों के हित में काम किया। इस बार प्रदेश में किसानों का इंकलाब होगा, बाइस में बदलाव होगा। यूपी से बीजेपी का सफाया होगा। पश्चिमी यूपी का जनसैलाब और जोश बता रहा है कि इस बार पश्चिम में भारतीय जनता पार्टी का सूरज डूब जाएगा और हमेशा के लिए डूबेगा।
>
> - अखिलेश यादव, राष्ट्रीय अध्यक्ष, समाजवादी पार्टी

जाट-मुस्लिम एकता से टेंशन में बीजेपी

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में माना जाता है कि विधानसभा की तकरीबन 100 सीटें आती हैं। (पश्चिमी उत्तर प्रदेश की वैसे सीमा निर्धारित नहीं है, इस वजह से आंकड़े अलग अलग हो सकते हैं)। 2017 विधानसभा चुनाव में बीजेपी इनमें से 80 सीटों पर जीती थी, जबकि 2012 के चुनाव में सिर्फ 38 सीटें जीती थीं। 2019 के लोकसभा चुनाव में 18 सीटें बीजेपी जीती जबकि 2014 में 23 सांसद यहां से जीते थे। बीजेपी को इस विधानसभा चुनाव में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के इसी किले के ढहने का डर था, इस वजह से उन्होंने कृषि कानून वापस लेने का फैसला किया। दरअसल कृषि कानून की वजह से वहां पिछले दिनों जितनी महापंचायत हुई, उसमें जाट-मुस्लिम एकता दोबारा से दिखने लगी थी। बीजेपी इसी बात से चिंतित थी। पश्चिमी यूपी में मुसलमान 32 फीसदी और दलित तकरीबन 18 फीसदी हैं। यहां जाट 12 फीसदी और ओबीसी 30 फीसदी हैं।

समाजवादी पार्टी का गठबंधन गणित

राजनीतिक विशेषज्ञ बताते हैं कि समाजवादी पार्टी को आरएलडी के गठबंधन से फायदा होगा। सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटीज (सीएसडीएस) में प्रोफेसर संजय कुमार कहते हैं कि आरएलडी का जनाधार पिछले 20 सालों में बहुत कम हुआ है, लेकिन अभी भी वो जाटों का प्रतिनिधित्व करती है। अगर जाट किसान बीजेपी से नाराज हैं और इलाके में अखिलेश और जयंत की पार्टी के उम्मीदवार चुनाव में आमने सामने हों तो वोटर वापस आरएलडी की तरफ ही जाएंगे। अगर अखिलेश यादव, जयंत चौधरी की पार्टी के साथ गठबंधन नहीं करते हैं तो ऐसे में फायदा बीजेपी का हो सकता है। इसलिए अखिलेश चाहते हैं कि जाट वोटों का बंटवारा इस चुनाव में न हो और आरएलडी के साथ गठबंधन का पूरा फायदा समाजवादी पार्टी को मिले। सीएसडीएस के मुताबिक 40-45 सीटों पर जाटों की संख्या बहुत ज्यादा है। ये सीटें किसी भी पार्टी की जीत और हार के लिए निर्णायक हैं।

1996 में आरएलडी का कांग्रेस में विलय

साल 1996 के लोकसभा चुनाव में आरएलडी का विलय कांग्रेस में हो चुका था। अजीत सिंह ने कांग्रेस के टिकट पर जीत दर्ज की, लेकिन कुछ समय बाद उन्होंने कांग्रेस से अपना नाता तोड़ लिया। इसके बाद वो संयुक्त मोर्चा का हिस्सा बन गए और देवेगौड़ा और गुजराल सरकार में मंत्री रहे। अजीत सिंह अपनी खोई जमीन तलाशने और सियासी मुनाफे के लिए इधर से उधर पाला बदलने की राजनीति करते रहे। हालांकि कांग्रेस में अजीत सिंह के जाने से उनके सियासी जनाधार में और बिखराव हो गया और पश्चिमी यूपी में बीजेपी ने कल्याण सिंह और राजनाथ सिंह के जरिए अपना प्रभाव विस्तार शुरू कर दिया। इसी का नतीजा है कि 1989 में अजीत सिंह को हार का सामना करना पड़ा। साल 1999 के लोकसभा चुनाव में अजीत सिंह जीते और बाद में बीजेपी से समझौता किया।

बीजेपी से भी मिलाया आरएलडी ने हाथ

साल 2002 में अजीत सिंह ने अटल सरकार से इस्तीफा दे दिया और बीजेपी से गठबंधन तोड़ लिया। इसका सियासी असर यूपी की राजनीति में भी पड़ा। मुलायम सिंह यादव के साथ अजीत सिंह की राजनीतिक प्रतिद्वंदिता जबरदस्त थी, लेकिन 2003 में जब यूपी में बीजेपी के गठबंधन से मायावती की सरकार चल रही थी, तब अजीत सिंह ने अपने 14 विधायकों का समर्थन मायावती सरकार से वापस लेकर उसके गिरने का रास्ता तैयार किया।

सपा सरकार में रही हिस्सेदार

मुलायम और अजीत के बीच तब पुल बनने का काम त्रिलोक त्यागी ने किया। अजीत सिंह ने मुलायम सिंह यादव को समर्थन देकर उनकी सरकार बनवाई। इसके लिए कांग्रेस को तैयार करने में भी अजीत सिंह की बड़ी भूमिका थी। इसी का नतीजा था कि मुलायम सरकार में अजीत सिंह के सात विधायक मंत्री बने थे। 2004 के लोकसभा चुनाव में आरएलडी ने सपा के साथ मिलकर किस्मत आजमाई, जो सपा के लिए फायदेमंद रहा। आरएलडी तीन सीटें जीतने में सफल रही तो सपा को 35 सीटें मिली। साल 2007 के विधानसभा चुनाव में सपा और आरएलडी अलग-अलग चुनाव लड़ीं। साल 2008 में जब अमेरिका के साथ परमाणु समझौते को लेकर वाममोर्चा की समर्थन वापसी के बाद यूपीए सरकार संसद में अविश्वास प्रस्ताव का सामना कर रही थी तब अजित सिंह ने कांग्रेस खिलाफ वोट दिया था। 2009 के लोकसभा चुनाव में आरएलडी ने बीजेपी के साथ मिलकर किस्मत आजमाया।

जब कांग्रेस से मिलकर आरएलडी लड़ी चुनाव

अजीत सिंह 2011 में यूपीए-2 का हिस्सा बने और मनमोहन सिंह की सरकार में नागरिक उड्डयन मंत्री बने. 2012 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और आरएलडी मिलकर मैदान में उतरी, लेकिन कोई बड़ा सियासी करिश्मा नहीं दिखा सकी। 2012 चुनाव में आरएलडी 46 सीटों पर लड़ी और 9 सीटें जीती जबकि कांग्रेस 355 सीटों पर लड़कर 22 सीटें ही जीत सकी। 2014 के लोकसभा चुनाव में आरएलडी और कांग्रेस की दोस्ती बरकरार रही। लेकिन, 2013 में हुए मुजफ्फरनगर दंगों ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में दशकों पुराना चौधरी चरण सिंह के जमाने का जाट-मुस्लिम राजनीतिक गठबंधन तार-तार कर दिया और इसका सीधा नुकसान अजीत सिंह और आरएलडी को हुआ। इस वजह से 2014 के लोकसभा चुनाव में अजित और उनके पुत्र जयंत चौधरी दोनों ही हार गए। कांग्रेस महज दो सीटें जीत पाई जबकि आरएलडी अपना खाता ही नहीं खोल सकी।

किसान आंदोलन से मिली संजीवनी

किसान आंदोलन शुरू हआ तो पश्चिमी यूपी भी उसके जद में रहा। अजीत सिंह ने बेटे जयंत को किसानों के पास भेजा और गाजीपुर बार्डर पर राकेश टिकैत रो पड़े तब अजित सिंह ने उन्हें फ़ोन करके न सिर्फ ढाढस बंधाया बल्कि पूरे पश्चिमी उत्तर प्रदेश के रालोद कार्यकर्ताओं को किसानों के साथ एकजुट होने की अपील की। अजीत सिंह ने राकेश टिकैत से कहा कि डटे रहना पीछे मत हटना। अगर पीछे हट गए पूरी किसान बिरादरी खत्म हो जाएगी जो फिर कभी खड़ी नहीं हो सकेगी। अजित सिंह के भरोसे के बाद ही राकेश टिकैत किसान आंदोलन का चेहरा बने तो आरएलडी को पश्चिमी यूपी में सियासी संजीवनी मिली। जाट-मुस्लिम में नजदीकियां बढ़ीं। पश्चिमी यूपी में आरएलडी के सियासी आधार को देखते हुए सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने जयंत चौधरी के साथ गठबंधन किया। दोनों दलों के बीच सीट शेयरिंग का फॉर्मूला को अभी सामने नहीं आया है, लेकिन माना जा रहा है कि आरएलडी 32 से 36 सीटों पर चुनाव लड़ सकती है।

2017 में हाशिए पर थी जयंत की पार्टी

2017 विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और सपा में दोस्ती हो जाने से आरएलडी हाशिए पर पहुंच गई। ये दोस्ती बिखरने का नुकसान दोनों दलों को हुआ। इसके बाद 2019 के लोकसभा चुनाव में आरएलडी बसपा और सपा के साथ हाथ मिलाकर चुनावी मैदान में उतरी। सपा-बसपा ने आरएलडी को तीन सीटें दी थी, जिनमें एक भी सीट वो नहीं जीत सकी। इतना ही नहीं, अजीत सिंह और जयंत दोनों हार गए जबकि बसपा को 10 और सपा को पांच सीटें जरूर मिली। इस गठबंधन का फायदा बसपा को मिला। वहीं गठबंधन में वोट शेयरिंग में आरएलडी को फायदा जरूर मिला। सपा और बसपा अगर 2019 के चुनाव में आरएलडी से हाथ न मिलाती तो दोनों दलों के लिए जीत की राह आसान नहीं थी।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

मथुरा का मुद्दा क्यों उठा रही भाजपा?

"2017 के चुनाव में भाजपा की बंपर जीत का कारण यह था कि उसे गैर यादव वोटरों ने भारी समर्थन दिया था। इस बार पार्टी को भरोसा नहीं है कि गैर यादव पहले की तरह भाजपा के साथ खड़े रहेंगे। अगर यादव भाजपा की तरफ खिंचे तो सपा को नुकसान होगा, जो इस चुनाव में सत्ता की दूसरी बड़ी दावेदार पार्टी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के रूप में अगड़ी जाति के संन्यासी को मुख्यमंत्री बनाने से पिछड़ों में असंतोष पहले से है।

यूपी चुनाव के पहले भाजपा ने ठंडे बस्ते में पड़ा मथुरा की कृष्ण जन्म भूमि का मुद्दा जिस तरह से उछाला है, उसके दो संदेश साफ हैं। पहला तो पार्टी आगामी चुनाव में भी साम्प्रदायिकता के अपने आजमाए हुए पिच पर फिर खेलने जा रही है, दूसरे, भाजपा का यह कमजोर आत्मविश्वास है कि वह योगी राज में सुशासन और विकास जैसे मुद्दों के भरोसे चुनाव जीत पाएगी। वरना अयोध्या में राम मंदिर निर्माण को लेकर विहिप हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार ने पिछले साल साफ कहा था कि उनकी पहली प्राथमिकता भव्य राम मंदिर का निर्माण है। अर्थात बाकी मुद्दे अभी गौण हैं लेकिन, सवा साल बाद ही यूपी के उपमुख्यमंत्री और भाजपा में विहिप से आए केशव प्रसाद मौर्य ने हाल में ट्वीट कर नई राजनीतिक सनसनी पैदा कर दी कि अयोध्या काशी में भव्य निर्माण जारी, मथुरा की तैयारी। मथुरा का मामला भी मथुरा जिला सिविल कोर्ट में चल रहा है। फिलहाल मुद्दा उठाने के चार कारण हो सकते हैं।

पहला तो किसान आंदोलन के कारण पश्चिमी यूपी में भाजपा की हालत पतली होना। दूसरा, ब्रजमंडल में भगवान राम के बजाए श्रीकृष्ण का ज्यादा महत्व रहा है। यहां लोग अभिवादन के रूप में भी 'जय श्रीराम' के बजाए 'जय श्रीकृष्ण' ज्यादा बोलते हैं। भाजपा को लगता है कि श्रीकृष्ण जन्मभूमि का मुद्दा उठाने से किसानों में मोदी-योगी सरकार के प्रति नाराजी कम होगी और वो वापस हिंदू छतरी में लौट आएंगे। तीसरा, इस मुददे को उठाने से सरकार के लिए नकारात्मक साबित होने वाले दूसरे मुद्दे दब जाएंगे। चौथे, भगवान कृष्ण उस यादव समाज के मुख्य आराध्य हैं, जिनकी संख्या यूपी में कुल ओबीसी आबादी का करीब 9 फीसदी है। यादव मुख्य रूप से समाजवादी पार्टी के साथ जुड़े हैं। भाजपा को लगता है कि श्रीकृष्ण जन्मभूमि का मुद्दा उठाने से यादव वोटो में भी सेंध लगाई जा सकती है। बता दूं कि 2017 के चुनाव में भाजपा की बंपर जीत का कारण यह था कि उसे गैर यादव वोटरों ने भारी समर्थन दिया था। इस बार पार्टी को भरोसा नहीं है कि गैर यादव पहले की तरह भाजपा के साथ खड़े रहेंगे। अगर यादव भाजपा की तरफ खिंचे तो समाजवादी पार्टी को नुकसान होगा, जो इस चुनाव में सत्ता की दूसरी बड़ी दावेदार पार्टी है। योगी आदित्यनाथ के रूप में अगड़ी जाति के संन्यासी को मुख्यमंत्री बनाने से पिछड़ो में असंतोष पहले से है। हालांकि इस पर मरहम लगाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी कैबिनेट में 28 ओबीसी नेताओं को जगह दी है। भाजपा नेतृत्व को यूपी में यह दांव इसलिए भी चलना पड़ा है, क्योंकि ब्राह्मण वोट इस बार भी उसके साथ रहेगा, इसका यकीन नहीं है। अगर सपा ओबीसी के साथ-साथ मुस्लिम वोटों का बड़ा हिस्सा अपने साथ ले गई तो भाजपा को सत्ता से बेदखल कर सकती है। हालांकि यह इतना आसान नहीं है।

संजय

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

एमएसपी को तार्किक व लाभप्रद बनाया जाए

प्रीतम सिंह, श्रुति भोगल

अब जबकि किसान आंदोलन ने तीन कृषि कानूनों को रद्द करवाने की ऐतिहासिक जीत प्राप्त कर ली है, तो यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम किसान आंदोलन में उठाए अन्य मुख्य मुद्दों पर ध्यान दें, इसमें न केवल न्यूनतम समर्थन मूल्य बल्कि अन्य व्यापक कृषि और विकास नीतियां भी शामिल हैं। कृषि संत्रास से मुक्ति हेतु सरकार का ध्यान अब सबको साथ लेकर कृषि नीति बनाने की तरफ अधिक होना जरूरी हो जाता है। सावधानीपूर्वक बनाई बृहद कृषि नीति में न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) व्यवस्था कायम करना अभिन्न अंग हो। एमएसपी और सार्वजनिक खरीद व्यवस्था (पीपीएस) के मिश्रण से काम करने वाली कृषि उत्पाद विपणन मंडी (एपीएमसी) आवश्यक रूप से प्रासंगिक है, इसमें आगे और सुधार करके फसल विविधता को बढ़ावा, जैव विविधता संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य प्राप्त हो सकते हैं। एमएसपी और पीपीएस वाली मौजूदा नीति गेहूं और चावल के अलावा अन्य फसलों पर लागू न होने का नतीजा है कि पंजाब की कृषि योग्य 90 फीसदी भूमि पर खेती गेहूं-चावल चक्र तक सीमित होकर रह गई है।

इसका हल इन दोनों जिन्सों के अलावा अन्य उपजों को भी एमएसपी और पीपीएस के दायरे में लाकर किसान को प्रोत्साहित करने में है। इस दो फसलीय चक्र में, खासकर पानी डकारने वाली खरीफ को छोड़ने के पर्यावरणीय लाभ हैं। इससे भूमिगत पानी की उपलब्धता सतत बनाने और मिट्टी की सेहत में सुधार होगा। फसल चक्र में विविधता लाना, भोजन की पौष्टिकता में सुधार करने के लिए भी जरूरी है। यह पंजाब और हरियाणा के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है, जहां खुराक अब ज्यादातर अन्न आधारित है, जबकि इसको पौष्टिकता के नजरिए से नाकाफी माना जाता है, लिहाजा यह कमी बहुत-सी बीमारियां पैदा करने में हिस्सेदार है।

दरअसल, इस क्षेत्र के पर्यावरण में ह्रास के लिए जिम्मेवार चावल की बुवाई त्यागकर फसल चक्र में विविधता बनाने की जरूरत की शिनाख्त काफी पहले हो चुकी है। खरीफ की फसल की कटाई के बाद पराली भी बहुत ज्यादा बचती है, जिससे निपटने को किसान आग लगाते हैं, लेकिन इससे न केवल मिट्टी की उर्वरता बल्कि इंसान के स्वास्थ्य को भी नुकसान होता है।

परंतु वैकल्पिक फसलों के लिए प्रभावशाली पीपीएस और एमएसपी व्यवस्था न होना जिंस-विविधता बनाने में अड़चन है। एमएसपी आर्थिक और पर्यावरणीय रूप से प्रभावशाली तभी होगी जब खेती किसान के लिए एक

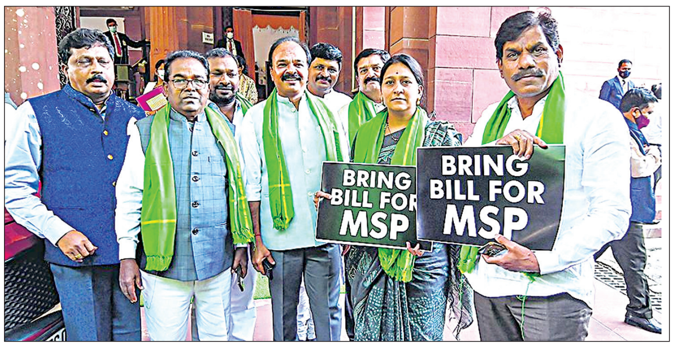

फायदेमंद धंधा बने। इस मंतव्य की पूर्ति के लिए स्वामीनाथन आयोग की सिफारिश को ध्यान में रखा जाए, जिसमें एमएसपी तय करने को सी-2+50 फीसदी फार्मूले को सुझाया गया था। नए समीकरण में सी-2 के तहत एमएसपी अनुमान लगाते वक्त गिने जाने वाले मौजूदा कारकों से अतिरिक्त लागतों को शामिल करना होगा। फिलहाल एमएसपी की गणना ए-2+एफएल+50 प्रतिशत से की जा रही है। इसमें ए-2 का मतलब है किसान द्वारा वहन किया 'वास्तविक खर्च' और एफएल (फैमिली लेबर) है उपज हेतु किसान परिवार द्वारा की गई मेहनत का अनुमानित मुआवजा, इन दोनों मदों में 50 प्रतिशत जोड़कर एमएसपी तय की जा रही है। इस 'वास्तविक खर्च' (ए-2) में खेत मजदूर का वेतन, अपनी और किराए की मशीनरी पर खर्च, बीज, कीटनाशक, घरेलू और बाजारी खाद, उर्वरक, सिंचाई व्यय, मशीनरी और खेत में बनी इमारत का अवमूल्यन, भूमि लगान, कार्य पूंजी पर लगने वाला ब्याज, अन्य खर्च जैसे कि रख-रखाव मद और अंत में लीज पर ली जमीन का किराया को गिना जाता है। लेकिन ए-2+एफएल फार्मूले में अभी भी तमाम बाकी खर्च शामिल नहीं है। इसकी बनिस्बत सी-2 में ए-2 वाले+एफएल+अन्य लागतें जैसे कि मालिकाना पूंजीगत संपत्ति (जमीन के अलावा) के मूल्य पर ब्याज + मालिकाना जमीन का बनता किराया भी जोड़ा गया है। अन्य शब्दों में एमएसपी के लिए इस्तेमाल हो रहा मौजूदा ए-2+एफएल वाला फार्मूला कृषक से कमाई को लाभप्रद नहीं बनाता, क्योंकि इससे किसान की लागत तक पूरी नहीं होती। दरअसल, एमएसपी तय करने में किसानों द्वारा वहन किए गए किन सभी खर्चों को शामिल करना चाहिए, इस बाबत वर्ष 2015 में रमेश चंद कमेटी बनाई गई थी। इसकी रिपोर्ट में एमएसपी को लाभप्रद बनाने हेतु अन्य लागतें सूची में शामिल की गईं। जिन मंडियों में खरीद या एमएसपी तय करने में सरकारें असफल रहें, वहां भरपाई एमएसपी और मौजूदा बाजार भाव के बीच का अंतर चुकाकर की जाए। ऐसी व्यवस्था मूल्य स्थिरता फंड के जरिए पहले से है, जिसका उद्देश्य मंडी में अचानक कीमतें गिरने की सूरत में किसान का घाटा पूरा करना है, लेकिन यह कुछ ही उत्पाद जैसे कि कॉफी, चाय, तंबाकू, प्याज़, आलू और दलहन पर लागू है। यह व्यवस्था तमाम फसलों के लिए होनी चाहिए।

क्रिप्टो कारोबार का नियमन हो

अजीत रानाडे

हाल ही में एक रेस्तरां में जाना बड़ा संतोषप्रद रहा। दोस्तों से मुलाकात और बातचीत हुई तथा बढ़िया खाना खाया गया। जब बिल आया, तो सबकी भौहें तन गयीं, बिल के साथ वेटर ने पांच-पांच सौ रुपए के दो वाउचर भी नत्थी किये थे। हमने पूछा, तो उसने बताया कि अगली बार आने पर उनका इस्तेमाल किया जा सकता है। ऐसा कभी भी किया जा सकता था और इसे किसी को दे भी सकते थे। ग्राहक को दोबारा बुलाने और उसके प्रति निष्ठा का यह नया तरीका है। अगर मैं वाउचर को किसी दोस्त या अनजान व्यक्ति को दे दूं या कुछ छूट पर बेच दूं या इसे सोशल मीडिया पर बेचने की कोशिश करूं, तो क्या ऐसे लेन-देन को अवैध माना जायेगा? क्या नकदी के बदले वाउचर बेचने से देश की मौद्रिक नीति का उल्लंघन होगा या इससे भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक संप्रभुता को नुकसान होगा? ये सवाल सरल नहीं हैं।

सत्तर के दशक में वाउचर की तरह एक योजना रेमन बोनस स्टांप नाम से चलती था। हर खरीद पर ये स्टांप मिलते थे, जिनकी अदला-बदली उपहार के बदले की जा सकती थी या इसे दोस्तों को दे सकते थे। कुछ लोगों ने इसे नगदी में भी भुनाया होगा। यह एक बड़ी सफल योजना थी, लेकिन जल्दी ही कुछ कारोबारियों ने केवल 'बोनस स्टांप' छापना शुरू कर दिया, जिसके समांतर मुद्रा बनने का खतरा पैदा हो गया। ऐसे में रेमन स्टांप को बंद करना पड़ा। वह दौर होलोग्राम और क्यूआर कोड से पहले का था, जिनसे नकली स्टांपों को रोका जा सकता था। पर अचरज नहीं कि निष्ठा कार्यक्रम चलते रहे और आज भी होटलों, जहाजों या आमेजन पर इनसे सामान खरीदे जा सकते हैं। वॉलेट व्यवस्था से बहुत चीजें और सेवाएं ली जा सकती हैं। प्रीपेड वॉलेट के लिए कई तरह के नियमन की जरूरत पड़ी, पर उन पर पाबंदी नहीं लगी।

अब क्रिप्टो करेंसी की नयी दुनिया पर विचार कर दें। यह संज्ञा ठीक नहीं है क्योंकि अभी वे संप्रभु मुद्राओं को हटाने वाली समांतर मुद्रा नहीं हुई है लेकिन ब्लॉकचेन तकनीक पर आधारित बिटक्वाइन के संस्थापक संप्रभु मुद्राओं के खिलाफ विद्रोह करना चाहते थे, सो इससे करेंसी का नाम जुड़ गया पर रेमन स्टांप या आमेजन जैसे वॉलेट पर चिंता नहीं करने वाले प्राधिकरण क्रिप्टो करेंसी से इतने बेचैन क्यों हैं? जल्दी ही संसद में सभी निजी क्रिप्टो करेंसी पर पाबंदी लगाने का विधेयक पेश होने वाला है। ऐसी करेंसियां अगर सैकड़ों नहीं, तो दर्जनों की संख्या में तो जरूर हैं। चीन, वियतनाम, मोरक्को और बोलिविया ने पहले ही निजी क्रिप्टो करेंसियों पर प्रतिबंध लगा दिया है, लेकिन अधिकतर देशों में ऐसी क्रिप्टो-परिसंपत्तियों का खूब कारोबार होता है। क्रिप्टो करेंसी का कारोबार और मालिकाना दुनियाभर में फैले इलेक्ट्रॉनिक लेजर पर आधारित होता है, जिसमें बदलाव नहीं किया जा सकता है। इसे विकेन्द्रीकृत ब्लॉकचेन तकनीक भी कहा जाता है. जिस तरह से आधार संख्या को तुरंत सुदूर स्थित सर्वर से प्रमाणित किया जाता है और जो सरकार द्वारा बहुत सुरक्षित प्रक्रिया से प्रबंधित किया जाता है, उसी तरह क्रिप्टो का भी प्रमाणन किया जाता है. लेकिन यह सत्यापन किसी केंद्रीय सत्ता या सरकार पर निर्भर नहीं होता है। यह क्रिप्टोग्राफी के परिष्कृत गणित और अल्गोरिदम पर आधारित होता है।

बहुत सक्षम साइबर विशेषज्ञ या हैकर भी क्रिप्टो परिसंपत्ति के मालिकाना की सुरक्षा में सेंध नहीं लगा सकता है। इसी कारण एक दशक से अधिक समय से यह निवेशकों की पसंद बना हुआ है। क्रिप्टो सिक्कों का 'खनन' अल्गोरिदम से किया जाता है और उनकी संख्या निश्चित होती है। कोई भी व्यक्ति इस सीमा को पार नहीं कर सकता है। इसमें सबसे पहला बिटक्वाइन है, जिसका मूल्य 65 हजार डॉलर की ऊंचाई तक पहुंच चुका है। जेपी मॉर्गन के विशेषज्ञों के अनुसार इसका लक्षित मूल्य 1.20 लाख डॉलर तक पहुंच सकता है। इसीलिए निवेशक इसकी ओर आकर्षित होते हैं और इसी कारण इसके मूल्य में बहुत उतार-चढ़ाव होता रहता है। इससे भारतीय निवेशक भी प्रभावित हुए हैं। आकलनों की मानें, तो दो करोड़ भारतीयों ने क्रिप्टो में करीब 40 हजार करोड़ रुपये का निवेश किया है। हाल में हुए टी-20 क्रिकेट विश्वकप में क्रिप्टो एक्सचेंजों ने टीवी विज्ञापनों पर करीब 50 करोड़ रुपये खर्च किया है। अखबारों के पहले पन्ने पर भी विज्ञापन दिये गये, जिनमें कहा गया गया कि क्रिप्टो से आपका निवेश दोगुना हो सकता है। इसी वजह से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लोगों को आगाह करते हुए बयान देना पड़ा, लेकिन वे भ्रामक विज्ञापनों की ओर संकेत कर रहे थे, न कि क्रिप्टो परिसंपत्तियों पर. अचरज की बात नहीं कि इसके बाद विज्ञापनों में बहुत नरमी आ गयी। पर इससे यह आशंका भी हुई कि सरकार पूरी तरह से क्रिप्टो पर पाबंदी लगा देगी। इससे निवेशक बेचैन हो उठे और दाम आधे से भी कम हो गये। चूंकि यह ब्लॉकचेन तकनीक पर आधारित है, जो समझौतों की सुरक्षा बढ़ाने और सीमाओं से परे लेन-देन में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी तथा रिजर्व बैंक की डिजिटल करेंसी का भी आधार होगी, इसलिए क्रिप्टो पर पाबंदी लगाना समझदारी की बात नहीं होगी। सोना में कुछ निवेश करने की तरह अगर लोग कुछ पैसा क्रिप्टो में भी लगाते हैं, तो इससे संप्रभु मुद्रा की स्थिरता पर कोई खतरा नहीं है और न ही इससे मौद्रिक नीति बेमतलब हो जाएगी। लोग आकस्मिक मुद्रास्फीति के समय बचाव के लिए सोना खरीदते हैं। मुद्रास्फीति से प्रभावित रहनेवाली मुद्रा में अविश्वास दिखाने का यह उनका ढंग है।

ठंड में रोज पिएं सोंठ वाला पानी शरीर बना रहेगा अंदर से गर्म

सर्दियों के मौसम के अपनी ही मजे हैं। घंटों तक रजाई या कंबल में रहना और गर्मा गर्म खाना पीना, इस मौसम को और भी बेहतर बना देता है। लेकिन सभी इस मौसम का लुत्फ उठा रहे हों या जरूरी तो नहीं। ऐसे बहुत से लोग हैं जो सर्दियों के मौसम में अक्सर बीमार ही रहते हैं या खुद को गर्म रखना इनके लिए बेहद मुश्किल हो जाता है। ऐसे ही लोगों के लिए आयुर्वेदिक डॉक्टर दीक्षा भावसार सर्दी में खुद को गर्म रखने का आसान तरीका बता रही हैं। दरअसल हाल ही में डॉक्टर दीक्षा ने अपने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट शेयर की है। इस पोस्ट में उन्होंने सर्दियों के मौसम में अदरक के पानी का एक नुस्खा बताया है। इस नुस्खे के जरिए आप स्वस्थ भी रह सकते हैं और बीमारियों से भी बच सकते हैं। आइए जानते हैं इस नुस्खे के बारे में।

कैसे तैयार करें यह पानी

☑ अगर आपको खुद को गर्म रखना है और बीमारियों से बचे रहना है तो आपको सूखे अदरक से यह पानी तैयार करना होगा। जिसकी विधि कुछ इस प्रकार है।

☑ इसके लिए सबसे पहले एक लीटर पानी लें इसके बाद इसमें आधी चम्मच सूखा हुआ अदरक लें जब इसमें से एक तिहाई पानी जल जाए यानी जब इसमें केवल 750 एमएल ही पानी बचे तो गैस बंद करें। अब इसे पूरे दिन आराम - आराम से पीते रहें।

अदरक के पानी के फायदे

☑ यह आपकी पाचन क्रिया को लाभ देता है। वजन को मैनेज करने में सहायता करता है।

☑ आपको खांसी और जुकाम से बचाकर रखता है। आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बेहतर करता है।

☑ यह आपको पेट फूलने, गैस और पेट दर्द की समस्या से बचाता है।

आयुर्वेद में होने वाले लाभ

आयुर्वेदिक डॉक्टर दीक्षा ने आयुर्वेद के मुताबिक इस पानी के जरिए क्या फायदे हो सकते हैं यह भी अपनी पोस्ट में शेयर किया है। यह फायदे कुछ इस प्रकार हैं।

आयुर्वेद के मुताबिक सूखे अदरक को Shunti या सोंठ भी कहा जाता है। सूखे हुए अदरक को पचाना अधिक आसान होता है। जबकि ताजा अदरक पचाना मुश्किल हो सकता है। आयुर्वेद के अनुसार ताजे अदरक के विपरीत सूखा अदरक आंत्र बंधनकारी होता है।

यह अग्नि को बढ़ाने और कफ को खत्म करने में बेहद कारगर होता है। सूखे अदरक का उपयोग किसी भी मौसम में मसाले के तौर पर भी किया जा सकता है। डॉक्टर दीक्षा के मुताबिक इस पानी की तासीर बेहद गर्म होती है। ऐसे में अगर किसी व्यक्ति अधिक ब्लीडिंग की समस्या हो या फिर हीटिंग डिसऑर्डर हो तो उन्हें इसका सेवन नहीं करना चाहिए।

हंसना मना है

पप्पू: परीक्षा खत्म होते ही जिम ज्वाइन कर लूंगा। गप्पू: क्यों? पप्पू: रिजल्ट आने तक मार झेलने लायक तो बॉडी बन ही जाएगी।

उस दिन तो उड़ते पंछी भी चौंक कर हवा में ही रूक गए। जब पत्नी बोली: सुनो, ये जो तुम कार में एसी चलाते हो, इसका बिल घर पर आता है या दुकान पर?

संता: यार तुझे पता है मेरे घरवाले मेरे खाने की बहुत तारीफ करते हैं। बंता: अच्छा तू खाना भी बना लेता है। संता: नहीं.. बंता तो फिर घर वाले तारीफ क्यों करते हैं तेरे खाने की.. संता: मेरे घर वाले कहते हैं, तुम अच्छा खाते हो, बहुत खाते हो और सब खा जाते हो।

पत्नी को हीरे का हार चाहिए था...तभी उसने एक तरकीब लगाई उसने अपने पति से कहा: मैंने आज सपनों में देखा है कि तुम मेरे लिए हीरों का हार लाए हो, इस सपने का क्या मतलब है? पति: आज शाम को बताऊंगा। शाम को पति ने एक पैकेट पत्नी को लाकर दिया। पत्नी बहुत खुश हुई- उसने जब खुशी से पैकेट खोला तो उस मे एक किताब निकली। किताब का नाम था, 'सपनो का मतलब'।

आखिर आज पता चल ही गया कि पत्नी को बेगम क्यों कहते है...क्योंकि शादी के बाद पत्नी बे, गम हो जाती है और सारे गम पति के हिस्से में चले जाते हैं...

कहानी: बीरबल की स्वर्ग यात्रा

दरबार का नाई बीरबल से बहुत चिढ़ता था तथा रोजाना उसके खिलाफ षड्यंत्र रचता रहता था। एक दिन उसके दिमाग में एक विचार आया और जब अकबर उसको हजामत करने के लिए बुलवाया तो वह बोला, जहांपनाह, आप जानते हैं, कल रात मैंने स्वप्न में आपके पिताजी को देखा ? बादशाह ने हज्जाम से पूछा, बताओ, वे तुमसे क्या कह रहे थे? वे स्वर्ग में बहुत खुश हैं, लेकिन वे कह रहे थे कि स्वर्ग के सभी वासी अकेले परेशान रहते हैं। वह चाहते थे कि आप वहां पर किसी को भेजें जो उनसे बातचीत कर सके। नाई ने कहा, महाराज, बीरबल बड़े मजाकिया स्वभाव के हैं आप उन्हें स्वर्ग भेज दें ताकि वे आपके पिताजी को खुश रख सकें। बीरबल, बादशाह के आदेश पर दरबार में पहुंचे तो अकबर ने कहा: बीरबल हम जानते हैं की तुम मेरे लिए कोई भी कुर्बानी दे सकते हो। बीरबल ने कहा, जी जहांपनाह। तो हम चाहते हैं कि तुम स्वर्ग में जाकर मेरे पिताजी का साथ दो क्योंकि वहां पर उनसे बातचीत करने वाला कोई नहीं है। बीरबल ने कहा, ठीक है, लेकिन मुझे तैयारी के लिए कुछ समय दीजिए। मुगल बादशाह फूले नहीं समाये और बोले, ठीक है तुम मेरे लिए इतना बड़ा बलिदान दे रहे हो तो मैं तुम्हें एक सप्ताह का समय देता हूं। बीरबल घर पहुंचा और एक गहरा गड्ढा खोदा जो उसकी कब्र का कार्य करता लेकिन साथ ही साथ उसके नीचे एक सुरंग खोदी जो उसके घर के अंदर खुलती थी। एक सप्ताह बाद बीरबल दरबार में पहुंचे। जहांपनाह, हमारे रिवाजों के अनुसार मैं चाहता हूं कि मुझे मेरे घर के नजदीक ही जलाया जाए और मैं जीवित ही चिता पर जलना चाहता हूँ ताकि मैं आसानी से स्वर्ग तक पहुंच सकूं। बीरबल को जीवित जलाया गया, यह देखकर हज्जाम की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। बीरबल अपनी बनाई सुरंग द्वारा घर में पहुंच गया। और घर में ही छह माह छुप कर बिताये। इतने समय में उनके बाल दाढ़ी बहुत ज्यादा बढ़ गये तो वे दरबार में पहुंचे। बादशाह बीरबल को देखते ही चिल्लाये, तुम कहां से आये? स्वर्ग से जहांपनाह, मैंने आपके पिताजी के साथ अच्छा समय बिताया इसलिए उन्होंने मुझे धरती पर वापस आने की विशेष आज्ञा दी। क्या उन्होंने तुम्हें अपने पुत्र के लिए कोई सन्देश भेजा है? जी केवल एक जहांपनाह, क्या आप मेरी बढ़ी हुई दाढ़ी व बाल देख रहे हैं, स्वर्ग में हज्जामों की कमी है। आपके पिताजी ने अपने एक हज्जाम को वहां भेजने को कहा है।

12 अंतर खोजें

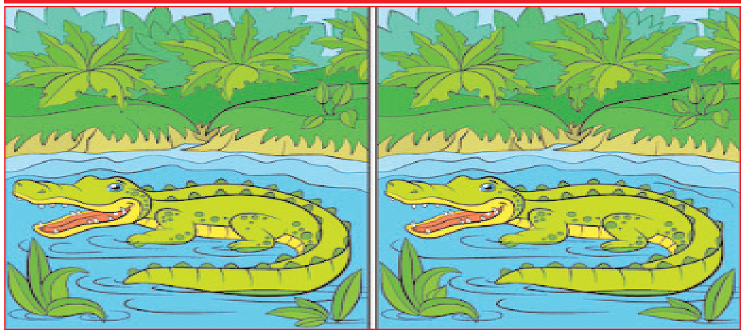

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष: भूमि व भवन संबंधी खरीद-फरोख्त की योजना बनेगी। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। आर्थिक उन्नति होगी। संचित कोष में वृद्धि होगी। देनदारी कम होगी। परिवार की चिंता बनी रहेगी।

वृषभ: शारीरिक कष्ट संभव है। लेन-देन में जल्दबाजी न करें। किसी आनंदोत्सव में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। यात्रा मनोरंजक रहेगी। स्वादिष्ट भोजन का आनंद मिलेगा।

मिथुन: शत्रुओं का पराभव होगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। आय में निश्चितता रहेगी। दुःखद समाचार मिल सकता है। व्यर्थ भागदौड़ रहेगी। काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। लाभ में वृद्धि होगी।

कर्क: पुराना रोग परेशानी का कारण बन सकता है। जल्दबाजी न करें। आवश्यक वस्तुएं गुम हो सकती हैं। चिंता तथा तनाव रहेंगे। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। निवेश शुभ रहेगा।

सिंह: किसी भी तरह के विवाद में पड़ने से बचें। जल्दबाजी से हानि होगी। राजभय रहेगा। दूर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। घर में मेहमानों का आगमन होगा। व्यय होगा।

कन्या: कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय सोच-समझकर करें। किसी अनहोनी की आशंका रहेगी। शारीरिक कष्ट संभव है। लेन-देन में लापरवाही न करें। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

तुला: मस्तिष्क पीड़ा हो सकती है। आवश्यक वस्तु गुम हो सकती है या समय पर नहीं मिलेगी। पुराना रोग उभर सकता है। दूसरों के झगड़ों में न पड़ें। व्यवसाय ठीक चलेगा।

वृश्चिक: बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। विवेक से कार्य करें। लाभ में वृद्धि होगी। फालतू की बातों पर ध्यान न दें।

धनु: पुराना रोग उभर सकता है। योजना फलीभूत होगी। कार्यस्थल पर परिवर्तन संभव है। विरोधी सक्रिय रहेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। मित्रों की सहायता कर पाएंगे।

मकर: व्यवसाय में ध्यान देना पड़ेगा। व्यर्थ समय न गंवाएं। पूजा-पाठ में मन लगेगा। कानूनी अड़चन दूर होगी। जल्दबाजी से हानि संभव है। थकान रहेगी। कुसंगति से बचें। निवेश शुभ रहेगा।

कुम्भ: घर-परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। वाणी पर नियंत्रण रखें। चोट व दुर्घटना से बड़ी हानि हो सकती है। लेन-देन में जल्दबाजी न करें। फालतू खर्च होगा।

मीन: कानूनी अड़चन दूर होकर लाभ की स्थिति निर्मित होगी। प्रेम-प्रसंग में जोखिम न लें। व्यापार में लाभ होगा। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। निवेश में सोच-समझकर हाथ डालें।

कंगना रनौत की तेजस की रिलीज डेट कन्फर्म

कंगना रनौत की अपकमिंग फिल्म 'तेजस ' लगातार चर्चा में है। फिल्म में कंगना एक बार फिर जबरदस्त एक्शन करती नजर आएंगी। जब से रॉनी स्क्रूवाला ने इस फिल्म की घोषणा की है, कंगना के फैंस बेसब्री से इसकी रिलीज डेट सामने आने का इंतजार कर रहे हैं। 'तेजस' में कंगना रनौत वायु सेना की पायलट तेजस गिल की भूमिका निभाती नजर आने वाली हैं। ऐसे में यह फिल्म हर तरफ चर्चा का विषय बनी हुई है। अब सशस्त्र बलों में हमारे बहादुर जवानों का सम्मान करते हुए, टीम 'तेजस' ने घोषणा कर दी है कि फिल्म अगले साल दशहरा के अवसर पर 5 अक्टूबर 2022 में सिनेमाघरों में रिलीज होगी। कंगना रनौत ने भी सोशल मीडिया के जरिए फैंस के साथ तेजस की रिलीज डेट शेयर की है। फिल्म की रिलीज डेट शेयर करते हुए कंगना लिखती हैं- 'आपके लिए एक ऐसी महिला की प्रेरक कहानी लेकर आ रहे हैं जिसने आसमान पर राज करने का फैसला किया। भारतीय वायु सेना के लिए एक श्रधांजलि, #तेजस दशहरे पर आपके नजदीकी सिनेमाघर में रिलीज हो रही है, 5 अक्टूबर 2022।' कंगना रनौत अभिनीत 'तेजस' से उनका लुक पहले ही जारी किया जा चुका है, जिसमें एक वायु सैनिक की ड्रेस में कंगना गजब की खूबसूरत लग रही हैं। फिल्म की कहानी सभी को प्रेरित करने और देश के बहादुर सैनिकों के प्रति गर्व महसूस करवाने के लिए है क्योंकि वे हमारे देश को सुरक्षित रखने के लिए कई चुनौतियों का सामना करते हैं।

कियारा आडवाणी के बैकलेस लहंगे ने ढाया कहर

बॉलीवुड मसाला

कियारा आडवाणी अपनी ऐक्टिंग के साथ ही अपनी खूबसूरती के लिए जानी जाती हैं। वो फिल्मों के अलावा सोशल पर भी खासा एक्टिव रहती है। और आए दिन अपनी हॉट तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर कर सुर्खियों में बनी रहती है । अब हाल ही कियारा आडवाणी ने इंस्टाग्राम पर पिंक कलर के लहंगे और बैकलेस चोली में ग्लैमरस फोटोज शेयर की हैं। इन फोटोज में कियारा अर्पिता मेहता के रैस्पबेरी पिंक और क्रीम ऑर्गैंजा लहंगा में नज़र आ रही हैं। जिस पर आहिर और मिरर हैंड एम्ब्रॉयड्री की गई है। इस लहंगे के साथ कियारा ने बैकलेस ब्लाउस पहना था जो उनके लुक को काफी स्टनिंग दिखा रहा था। वहीं लहंगे के हेवी वर्क को बैलेंस करने के लिए एक हल्के मिरर-वर्क वाले शीयर दुपट्टे कैरी किया है। अगर आप इस लहंगा को अपनी किसी फ्रेंड की शादी में पहनने के लिए खरीदना चाहते है तो आपको बता दे कि इस लहंगे की कीमत तीन लाख 25 हज़ार रुपए है। वही कियारा के लुक की बात करे तो उन्होनें अपने इस अटायर के साथ व्हाइट पर्ल्स का नेकलेस कैरी किया है। तो वहीं एक हाथ में कियारा ने मोती के बने कड़े पहने हैं। ये सुंदर ज्वैलरी कियारा के लुक में चार-चांद लगा रही है।

वहीं कियारा के बालों को बिल्कुल पोकर स्ट्रेट स्टाइल किया गया है जिससे देखने वालों का ध्यान उनके आउटफिट से ना हटे। कियारा के चेहरे को काफी फ्रेश और ग्लोइंग लुक दिया गया है ब्लश और हाइलाइटर के साथ। सोशल मीडिया पर कियारा आडवाणी के लाखों फैन्स उनके इस लुक पर जमकर लाइक और कमेंट्स करते नजर आ रहे हैं।

बॉलीवुड | मन की बात

फिल्म 'आकाशवाणी' के फ्लॉप होने पर फूट-फूट कर रोई थी नुसरत भरूचा

अपनी शानदार एक्टिंग से लोगों का दिल जीतने वाली एक्ट्रेस नुसरत भरूचा अपनी एक्टिविटी के चलते काफी चर्चा में रहती हैं। वो अक्सर अपनी प्रोफेशनल लाइफ से जुड़े अपडेट सोशल मीडिया पर फैंस के साथ शेयर करती रहती हैं। इसी बीच उन्होंने एक इंटरव्यू के दौरान खुलासा किया कि वो अपनी फिल्म आकाश-वाणी के फ्लॉप होने पर निर्देशक के ऑफिस में फूट-फूट कर रो पड़ीं थीं। एक्ट्रेस ने एक साक्षात्कार में कहा कि फिल्म आकाश-वाणी उनके दिल के बेहद करीब थी और फिल्म के फ्लॉप होने पर वो बुरी तरह से टूट गई और फूट-फूट कर रोने लगीं। वही रिपोर्ट में दावा किया गया है कि अभिनेत्री ने सिद्धार्थ कन्नन से बात करते हुए कहा कि आकाश-वाणी एक हफ्ते भी सिनेमाघरों में नही टिक पाई और दर्शकों की खराब प्रतिक्रिया के कारण वक्त से पहले ही फिल्म को बाहर कर दिया गया। नुसरत भरूचा ने आगे कहा कि, मुझे याद है मैं कुमार जी के ऑफिस गई वहां सभी लोग बैठे थे और बात कर रहे थे कि मूवी क्या नहीं चली, जिसके बाद में खूब रोई थी। मुझे सभी ने समझाया और कहा कि ऐसा होता है कभी-कभी फिल्में नहीं चलतीं। घरेलू हिंसा पर आधारित है फिल्म लव रंजन के निर्देशन में बनी इस फिल्म में अभिनेत्री ने घरेलू हिंसा से पीड़ित महिला की भूमिका निभाई थी। फिल्म में उनके साथ अभिनेता कार्तिक आर्यन और सनी सिंह ने मुख्य भूमिका निभाई है। बात अगर उनके वर्कफ्रंट की करें तो वो बैक टू बैक कई फिल्मों में नजर आने वाली हैं। वो ओमंग कुमार के निर्देशन में बन रही फिल्म जनहित में जारी में मुख्य भूमिका ने नजर आने वाली हैं। नुसरत के अलावा फिल्म में परितोष त्रिपाठी, अनु कपूर और अनुद ढाका भी मुख्य भूमिकाओं में दिखाई देंगे।

गाय की हुई गोदभराई लोगों ने लिया आशीर्वाद

हिंदू धर्म में गाय को हमेंशा माता का दर्जा दिया गया है। अनंतकाल से हम गाय की पूजा करते आए हैं। लोगों का गाय के प्रति स्नेह और प्रेम इतना ज्यादा रहा है कि उसे हमेंशा अपने परिवार का हिस्सा ही माना है। यही प्रेम अब आंध्रप्रदेश के गुंटूर जिले में दिखाई दिया। इस जिले के वेमुरु में एक गर्भवती गाय के लिए अनोखा गोदभराई कार्यक्रम रखा गया। गांव के लोगों ने भी गांव की समृद्धि और तरक्की के लिए जोर-शोर से इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। गोदभराई के दौरान गाय को बहुत ही सुंदर ढंग से सजाया गया। गाय के माथे पर टीका लगाकर माला पहनाई गई। गाय माता के स्वागत के लिए फूलों की बारिश की गई। गोदभराई के दौरान गाय को साड़ी भी भेंट की गई। ग्रामीणों ने गाय माता को चश्मा, फूल और साड़ी के साथ नाश्ता भी दिया। लोगों ने गोमाता की पूजा-अर्चना कर गांव की तरक्की के लिए प्रसाद चढ़ाकर समृद्धि उत्सव भी मनाया। हिन्दू धर्म के अनुसार गाय में देवी-देवताओं का वास माना गया है। यहां के ग्रामीणों का भी कहना है कि गाय की पूजा-अर्चना करना गांव की समृद्धि के लिए है। गोदभराई के दौरान लोग गाय के चारों और खड़े थे। गाय को खाने के लिए चारा भी रखा गया था। वहां लोगों ने नाच-गाकर गाय का आर्शीवाद भी लिया और गांव की खुशहाली की कामना की। बता दें कि इससे पहले अक्टूबर महीने में आंध्रप्रदेश के कृष्णा जिले में भी एक ऐसा ही दृश्य देखने को मिला था। यहां भी एक गाय मालिक ने गर्भवती गाय का गोदभराई कार्यक्रम रखा था। इस दौरान पारंपरिक गीतों के कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था।

अजब-गजब | पुरातत्वविदों को रोमन साम्राज्य के मिले हैं मकबरे

सिकंदर के जमाने का खजाना है इस देश में, पत्थरों से बनाए गए थे 400 मकबरें

दुनिया में कई ऐसी चीजें मौजूद है जिनके बारे में हम नहीं जानते हैं, तुर्की में भी कुछ ऐसी ही घटना नजर आई है। एजियन सागर से 180 किलोमीटर पूर्व में स्थित ऐतिहासिक शहर ब्लॉनडोस में खोज कर रहें पुरातत्वविदों को रोमन साम्राज्य के समय के पत्थरों से बने 400 मकबरें मिले हैं, बताया जाता है कि यह 1800 साल पुराने हैं, इन्में बड़ी खूबसूरती से वॉल पेंटिंग्स की गई है।

सिकंदर के समय बना था शहर

इस शहर का मिर्माम सिकंदर के काल में किया गया, इसका स्वर्णिम काल रोमन से बिजेनटाइन साम्राज्य तक चला था। यहां के गुफाओं में एक खास प्रक्रिया की जाती थी जिसे सार्कोफैगी के नाम से जाना जाता है, इस प्रक्रिया में मरे हुए जानवरों और इंसानों को रखा जाता था। यह रिवाज कई पीढ़ियों तक अपनाया गया था।

अजीब थी अंतिम संस्कार की प्रथा

हाल में हुए खनन में प्रमुख रहें तुर्की की यूसाक यूनिवर्सिटी के पुरातत्वविद बिरोल कैन बताते है कि ब्लॉनडोस में मिल इन मकबरों के अंदर पहले के समय पर मरने वाले एक परिवार के लोगों के शव को रखा जाता था। उनके अंतिम संस्कार के तौर पर मकबरे के अंदर रख कर गुफा को बंद कर दिया जाता था। इस प्रथा का निर्माण यहां मौजूद लोगों ने किया और घाटियों की ढलान पर नेक्रोपोलिस बना दिया था।

खोज में मिली यह चीजें

पुरातत्वविद कई सालों से नेक्रोपोलिस पर खोज कर रहें हैं, 2018 में सिसिलेबार तरीके से खोज करन में उनके हाथ कई सारी चीजें लगी जिनमें शामिल है दो मंदिर, एक सार्वजनिक बाथरूम, एक थियेटर, बैसिलिका, रोमन साम्राज्य के राजा हेरून की समाधि और पत्थरों से बने मकबरे। यहां अलग-अलग पत्थरों से बने अबतक 400 मकबरे मिले हैं जिनमें में इंसानों की हड्डियां हैं। खोज में पाए गए 24 मकबरो की दीवारों पर पेंटिंग्स पाई गई है। इन्हें सुरक्षित रखने की पूरी कोशिश की जा रही है।

गुल होने वाली है भाजपा की बत्ती : अखिलेश

सपा प्रमुख बोले- लाल रंग हनुमानजी का है, भाजपा को लाल टोपी का डर सता रहा है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा भाजपा नेताओं को लाल टोपी का डर सता रहा है। उन्हें अपना राजनीतिक अस्तित्व खतरे में लग रहा है। भाजपा की लाल बत्ती गुल होने वाली है। इस सच्चाई से भाजपा अच्छी तरह परिचित हो गई है। यही वजह है कि वह समाजवादी पार्टी पर अनर्गल आरोप लगाने लगी है।

सपा अध्यक्ष ने कहा कि भारतीय संस्कृति का राग अलापने वाले भाजपा नेताओं को यह नहीं पता है कि लाल रंग हनुमानजी का है। जीवन में लाल रंग बदलाव और खुशहाली का प्रतीक है। लेकिन भाजपा इस बात को समझने को तैयार नहीं है। उसकी नीतियां नफरत फैलाने वाली है। भाजपा नेताओं को देश की भावनाओं से कोई लेना देना नहीं। किसानों, नौजवानों की समस्याओं के प्रति उसका रुख उपेक्षापूर्ण है। किसानों से किए गए वादों को भाजपा भूल गई है। यही नहीं, उसने अपने चुनाव संकल्प पत्र में जो वादे किए थे उन्हें भी वह कूड़े में डाल चुकी है। नौजवानों को रोजगार के झूठे आंकड़ों से भ्रमित किया जाता है। उन्होंने कहा कि संसदीय जनतंत्र में भाषा और व्यवहार की मर्यादा से दल और व्यक्ति का परिचय होता है। भाजपा नेतृत्व में भाषा का संयम मिटता जा रहा है। उसका आचरण भी मर्यादा लांघता नजर आने लगा है। उन्होंने कहा कि भाजपा को वर्ष 2022 में सपा को मिलने वाले जनाधार का अंदाजा लग गया है। ऐसे में वह व्यक्तिगत आरोप लगाने में भी पीछे नहीं रह रही है।

किसानों का हक मारना चाहती है बीजेपी

चुनाव को लेकर तैयारियों में लगी पार्टियां एक-दूसरे पर कड़ा प्रहार करती नजर आ रही हैं। यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने दावा किया कि आगामी चुनाव में हमारी पार्टी 400 से अधिक सीटें ले आएगी। साथ ही उन्होंने बीजेपी पर कई आरोप लगाएं। अखिलेश ने कहा जिस कानून को बीजेपी ने वापस लिया है उसे पर पहले बताएं कि यह तीन कानून किस तरह से किसानों के हक में थे। अगर किसानों के हक में नहीं थे तो इस तरह के कानून को क्यों पारित किया गया था। अगर यह किसानों के हक में थे तो किस कारण से इसे वापस ले लिया गया।

कहीं 'लाल टोपी' वाला बयान धूल न चटा दे भाजपा को

पूर्व आईएएस सूर्य प्रताप सिंह ने लिखा दीदी ओ दीदी वाले बयान ने जमीन दिखाई थी।

कहीं 'लाल टोपी' वाला बयान उन्हें धूल न चटा दे। प्रधानमंत्री पद की गरिमा को तार-तार कर चुके मोदी जी क्या अब इतने बौखला गए हैं कि राजनीतिक शुचिता भी भूल जाएंगे? वो क्या बनाएंगे भारत को 'विश्वगुरु' जो खुद नफरत फैला कर अपना पोषण करते हैं? एक अन्य ट्वीट में उन्होंने लिखा टोपी (पगड़ी) की शान, आप क्या जानो, मोदी बाबू।

उत्तराखंड चुनावी रण : भाजपा का कमजोर और मजबूत सीटों को छांटने का होमवर्क पूरा

- » संगठन में चेहरा बदलने की संभावना तलाशने के साथ जोड़तोड़ शुरू हो गया
- » पार्टी प्रत्याशी चयन को लेकर मंथन करेगा प्रदेश नेतृत्व

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। विधानसभा चुनाव से पहले प्रदेश में सत्तारूढ़ भाजपा ने कमजोर और मजबूत विधानसभा सीटों को छांटने के लिए अपना होमवर्क पूरा कर लिया है। जिन सीटों पर पार्टी को खतरे की आहट हो रही है, वहां चेहरा बदलने की संभावना तलाशने के साथ जोड़तोड़ और पार्टी कैडर की सक्रियता के जरिए स्थिति सुधारने के प्रयास तेजी से शुरू हो गए हैं।

70 विधानसभा क्षेत्रों में तैनात संयोजक और विधानसभा प्रभारी इस अभियान की अहम कड़ी हैं। इस बीच केंद्रीय मंत्री प्रहलाद जोशी के नेतृत्व में चुनाव प्रभारी व सह प्रभारियों की टीम भी विधायकों और संभावित दावेदारों के दमखम को टटोलने में जुट गई है। संगठन के स्तर पर कराए गए अभी तक के सर्वे की जो रिपोर्ट केंद्रीय और प्रांतीय नेतृत्व को प्राप्त हुई, उसमें 30 विधानसभा सीटों पर पार्टी को माथापच्ची करनी पड़ रही है। इनमें 20 विधानसभा सीटें भाजपा के कब्जे वाली हैं, जबकि 11 कांग्रेस वर्चस्व वाली हैं।

चुनाव प्रभारी ने सांसदों से लिया फीडबैक

उत्तराखंड भाजपा के चुनाव प्रभारी प्रहलाद जोशी ने पिछले दिनों में पूर्व केंद्रीय मंत्री व हरिद्वार के सांसद डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक, केंद्रीय रक्षा राज्यमंत्री अजय भट्ट, पूर्व केंद्रीय मंत्री व अल्मोड़ा के सांसद अजय टम्टा, टिहरी सांसद माला राज्यलक्ष्मी और राज्य सभा सांसद नरेश बंसल से चर्चा कर चुके हैं। सूत्रों के मुताबिक, चर्चा के दौरान कमजोर सीटों पर संभावित दावेदारों के नामों पर भी विचार किया गया। पूर्व में विधानसभा चुनाव लड़े प्रत्याशियों से भी चुनाव प्रभारी फीडबैक ले रहे हैं। पार्टी के उन दावेदारों से भी चर्चा हो रही है, जो पार्टी के टिकट पर पिछला चुनाव लड़े थे, लेकिन हार गए थे। पार्टी नेतृत्व और चुनाव प्रभारी को अभी तक जो फीडबैक मिला है, उसमें तकरीबन विधायकों के चुनाव क्षेत्रों में सत्तारोधी रुझान का प्रभाव है।

कुछ सीटों पर प्रत्याशी बदलने का दबाव

पार्टी पर 57 में से कुछ सीटों पर प्रत्याशी बदलने का भारी दबाव है। कुछ सीटों पर पार्टी विधायक की सीट बदलकर सत्तारोधी रुझान के प्रभाव को खत्म करने के विकल्प पर गंभीरता विचार कर रही है। 20 से अधिक सीटों पर तो यह रुझान बेहद गंभीर स्थिति में है, जबकि अन्य सीटों पर इसका उससे थोड़ा कम प्रभाव है। इस लिहाज से यदि पार्टी सभी 57 विधायकों को उम्मीदवार बनाती है तो उसे सत्तारोधी चुनौती का सामना करना पड़ेगा।

अधिकारी रोजाना जनता की शिकायतों का करेंगे निस्तारण : कौशल राज शर्मा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। वाराणसी के जिलाधिकारी कौशल राज शर्मा ने प्रत्येक दिन अधिकारियों को जनता की शिकायतों के निस्तारण की जिम्मेदारी सौंपी है। बनारस के रायफल क्लब में अधिकारी प्रत्येक दिन सुबह दस बजे से 12 बजे तक बैठ कर जनता की शिकायतों को सुनेंगे। जिलाधिकारी की ओर से जारी आदेश में कहा गया है कि सोमवार को अपर जिलाधिकारी नगर बैठेंगे।

अगर अपर जिलाधिकारी नगर नहीं रहेंगे तो सीआरओ या अपर नगर मजिस्ट्रेट इस कार्य को मूर्तरूप देंगे। दूसरे दिन मंगलवार को अपर जिलाधिकारी प्रशासन या अपर नगर मजिस्ट्रेट प्रथम जनता की शिकायतों को सुनेंगे। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी अधिकारी तय समय पर बैठे व गंभीरता से शिकायतों का निस्तारण करें। इसी क्रम में बुधवार को अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व व अपर नगर चतुर्थ जनता की शिकायतों का निस्तारण करेंगे। जिलाधिकारी ने जारी आदेश में कहा है कि

गुरुवार को अपर जिलाधिकारी नगरिक आपूर्ति तथा अपर नगर मजिस्ट्रेट तृतीय जिला रायफल क्लब में बैठेंगे। अपर जिलाधिकारी प्रोटोकॉल व अपर उप जिलाधिकारी सदर तथा शनिवार को अपर जिलाधिकारी नागरिक आपूर्ति व डिप्टी कलेक्टर राजस्व जनता की समस्याओं को सुनेंगे। जिलाधिकारी ने जारी आदेश में कहा कि सभी अधिकारी नियमित जनता की समस्या सुने। निस्तारण करे। अगर किसी विभाग से जुड़ा मामला है तो समय अवधि में निस्तारण का निर्देश दें। सभी शिकायतों को रजिस्टर में अंकित करें।

यूपी की अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयां देगा गंगा एक्सप्रेसवे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। शाहजहांपुर के रेलवे मैदान में 18 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गंगा एक्सप्रेस-वे का शिलान्यास करेंगे। कार्यक्रम की तैयारियों का जायजा लेने के लिए कल मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शाहजहांपुर पहुंचे। उन्होंने हेलिपैड, मंच आदि को देखकर अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि गंगा एक्सप्रेस-वे उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयां प्रदान करेगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 18 दिसंबर को पश्चिमी उत्तर प्रदेश से शुरू होकर मध्य उत्तर प्रदेश होते हुए पूर्वी उत्तरी प्रदेश को जोड़ने वाले गंगा एक्सप्रेस-वे का शिलान्यास करेंगे। यह देश का सबसे बड़ा एक्सप्रसे-वे होगा। लगभग छह सौ किलोमीटर लंबे इस सिक्स लेन एक्सप्रेस-वे को बाद में बढ़ाकर आठ लेन का किया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि इसकी पूरी योजना बना ली गई है।

36 हजार करोड़ रुपए की लागत से यह एक्सप्रेस-वे बनेगा, जिसमें 96 फीसदी भूमि अधिग्रहण हो चुका है। यह एक्सप्रेस-वे मेरठ, हापुड़, बुलंदशहर, अमरोहा, बदायूं, शाहजहांपुर, हरदोई, उन्नाव, रायबरेली, प्रतापगढ़ होते हुए प्रयागराज तक जाएगा। इसमें 518 ग्राम पंचायतों से 60386 हेक्टेयर लैंड ली गई है। कार्य आरंभ कराने की दृष्टि से ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शाहजहांपुर आ रहे हैं। सीएम ने कहा हमारा प्रयास होगा कि कुछ महत्वपूर्ण स्थलों पर इमरजेंसी लैंडिंग और एयर एंबुलेंस के उद्देश्य से हेलिपैड की व्यवस्था भी हो।

उत्तराखंड में तीन दिन का राजकीय शोक, नहीं होगा कोई समारोह

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। वायु सेना का चॉपर क्रैश होने से देश के सेना प्रमुख जनरल बिपिन रावत और 11 अन्य के देहावसान के बाद देश भर में शोक की लहर है। उत्तराखंड में शोक का प्रमुख कारण यही है कि जनरल रावत राज्य की मिट्टी से ही ताल्लुक रखते थे। उनके निधन के बाद उत्तराखंड सरकार ने राज्य में तीन दिनों के राजकीय शोक का ऐलान करते हुए कहा इस दौरान कोई समारोह या आयोजन नहीं होगा।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अपने सोशल मीडिया के जरिए इस तरह की घोषणा की और एक निजी संदेश जारी करते हुए जनरल रावत व अन्य दिवंगतों के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि दी। धामी ने ट्विटर पर लिखा, देश के चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत के निधन से पूरे भारतवर्ष में शोक की लहर है। उत्तराखंड सरकार ने पुण्य आत्माओं को श्रद्धांजलि देते हुए प्रदेश में तीन दिन के राजकीय शोक की घोषणा की है।

फोटो : 4पीएम

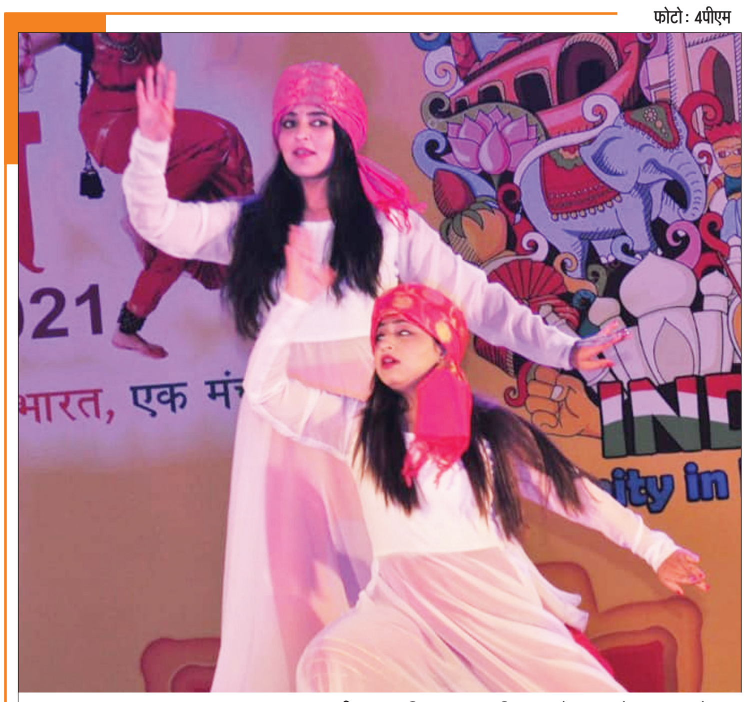

सांस्कृतिक संध्या लखनऊ। कांशीराम स्मृति उपवन आशियाना में चल रहे भारत महोत्सव 2021 की नवीं सांस्कृतिक संध्या में गजल, भजन संग कथक नृत्य नाटिका ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया। इसके पूर्व सांस्कृतिक संध्या का उद्घाटन प्रगति पर्यावरण संरक्षण ट्रस्ट के अध्यक्ष विनोद कुमार सिंह और उपाध्यक्ष नरेंद्र बहादुर सिंह ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर प्रियापाल, पवन पाल सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे।

चुनाव से पहले लाल रंग पर खिंची तलवारें

काली टोपी वाले लोग काला कानून लाते हैं हार के डर से वापस ले लेते हैं : संजय सिंह

» पीएम मोदी की टिप्पणी के बाद राज्यसभा सदस्य ने बताए टोपी के मायने

» मुद्दों पर बोल नहीं रही सरकार, गुमराह कर रहे हैं सिर्फ जनता को

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। प्रधानमंत्री मोदी के लाल रंग की टोपी वाले बयान पर यूपी में संग्राम छिड़ गया है। पीएम मोदी के बयान पर पलटवार करते हुए अखिलेश यादव ने भाजपा को लाल रंग के मायने बताए तो वहीं इस विवाद में आम आदमी पार्टी और कांग्रेस की भी एंट्री हो गई है। आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने लाल रंग को क्रांति का प्रतीक बताते हुए पीएम मोदी और भाजपा पर निशाना साधा है।

संजय सिंह ने कहा कि मैं बहुत हैरान हूं कि भारत के पीएम के आधिकारिक ट्विटर हैंडल से किसी टोपी, वस्त्र के बारे में, आतंकियों को छोड़ने ऐसे ट्वीट कैसे हो सकते हैं। क्या पीएम मोदी अपने विचारों के स्तर को इस हद तक ले जाना चाहते हैं। यूपी में बेरोजगारी, महिलाओं की सुरक्षा, किसान, टीईटी पेपर लीक जैसे तमाम मुद्दे हैं। इन पर बात होनी चाहिए। इन पर सरकार कुछ नहीं बोल रही है। लाल रंग क्रांति का प्रतीक है। मुझे इस बात की चिंता है कि कहीं लाल किले का नाम बदलकर काला किला न कर दिया जाए। पीएम क्या 15 अगस्त को काले किले से भाषण देंगे। ये काली टोपी पहनने वाले लोग हैं। ये काला कानून लाते हैं। इनका काला दिमाग है। उधर, कांग्रेस ने कहा कि बीजेपी और सपा नूरा कुश्ती खेल रहे हैं और दोनों जानते हैं सत्ता से बाहर हैं, जबकि सपा नेता अभिषेक मिश्रा ने कहा, लाल रंग बदलाव का रंग है। दरअसल, पीएम मोदी मंगलवार को गोरखपुर पहुंचे थे। इस दौरान पीएम मोदी ने लाल टोपी के जरिए सपा पर निशाना साधा था। पीएम मोदी ने कहा था, लाल टोपी पहनने वालों को सरकार बनानी है, इन्हें आतंकियों पर मेहरबानी दिखाने और आतंकियों को छुड़ाने के लिए सरकार बनानी है। पीएम मोदी ने कहा, ये लोग यूपी के लिए रेड अलर्ट हैं यानी खतरे की घंटी।

कांग्रेस भी कूदी टोपी विवाद में

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू ने कहा, भाजपा और सपा नूरा कुश्ती खेल रहे हैं और दोनों जानते हैं कि वे सत्ता से बाहर हैं। अखिलेश खुद को विपक्ष कहते है, बोलते हैं सरकार बना रहे हैं। क्या उन पर एक भी मुकदमा है, लाठी खाए हैं या जेल गए हैं। कुछ भी नहीं किया, नेता ऐसे नहीं होते।

"लाल रंग बदलाव का रंग है। लाल रंग सिंदूर का रंग है, जोड़े का और सुहाग का रंग है। ब्राह्मण का रंग है। जो लोग लाल रंग पर सवाल उठा रहे हैं, वह याद रखें कि सबकी रगों में लाल रंग ही दौड़ रहा है। भाजपा के लिए यह लाल रंग असफलता का रंग बनेगा। लाल रंग वाले अपने विचारों के पक्के होते है, जो लोग अलग रंग की टोपी लगा रहे हैं वही जानें।

अम्ब्रीश सिंह पुष्कर
विधायक मोहनलालगंज

यूपी विधानमंडल का शीतकालीन सत्र 15 से

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल की मंजूरी के बाद अधिसूचना जारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी सरकार ने 15 दिसंबर से विधानमंडल का शीतकालीन सत्र आहूत करने का निर्णय किया है। राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने शीतकालीन सत्र के लिए अनुमति दे दी है। राज्यपाल की मंजूरी के बाद विधान परिषद और विधान सभा सचिवालयों की ओर से इस बारे में अधिसूचना जारी कर दी गई है। यह इस वर्ष विधान परिषद का तीसरा और विधान सभा का चौथा सत्र होगा।

विधान सभा के उपाध्यक्ष पद पर निर्वाचन के लिए बीती 18 अक्टूबर को विधान सभा का तीसरा विशेष सत्र आहूत किया गया था। शीतकालीन सत्र में सरकार वित्तीय वर्ष 2022-23 के शुरुआती चार महीनों के दौरान सरकार के जरूरी खर्चों से निपटने के लिए लेखानुदान लाएगी। वहीं सत्र के दौरान योगी सरकार चालू वित्तीय वर्ष के लिए दूसरा अनुपूरक बजट भी लाने की तैयारी कर रही है। शीतकालीन सत्र में विधायी कार्य भी होंगे। चुनाव के मद्देनजर इस सत्र में योगी सरकार अगले वित्तीय वर्ष के लिए पूर्ण बजट लाने के बजाए चार महीने का लेखानुदान पास कराएगी। साथ ही वर्तमान वित्तीय वर्ष का दूसरा अनुपूरक बजट लाया जा सकता है। खास बात यह है कि मौजूदा 17वीं विधानसभा का यह संभवत: आखिरी सत्र है। इसमें सरकार कई महत्वपूर्ण घोषणाएं भी कर सकती है।

सत्र में हंगामा होने के आसार

उत्तर प्रदेश सरकार का यह पांचवां साल है। चुनावी साल होने के नाते योगी आदित्यनाथ सरकार शीतकालीन सत्र के दौरान इस वित्तीय वर्ष के लिए दूसरा अनुपूरक बजट पेश कर सकती है। इसमें कुछ वर्गों पर डोरे डालने के लिए नई योजनाओं के लिए संसाधन जुटाए जाने को लेकर अहम निर्णय हो सकते हैं। इनमें किसानों और गरीब परिवारों के लिए सौगातें हो सकती हैं। श्रम संहिता व पोंजी स्कीम पर अंकुश लगाने से जुड़े कानूनों में संशोधन संबंधी विधायी कार्य भी शीतकालीन सत्र में होने के आसार हैं।

डिप्लोमा फार्मेसिस्ट एसोसिएशन का प्रदर्शन, 17 से संपूर्ण हड़ताल की चेतावनी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश शासन द्वारा मान्यता प्राप्त डिप्लोमा फार्मेसिस्ट एसोसिएशन ने आज स्वास्थ्य विभाग व यूपी सरकार के खिलाफ अपनी मांगों को लेकर नारेबाजी की। विरोध कर प्रदर्शन किया। सरकार को अल्टीमेटम दिया कि अगर हमारी मांगें नहीं मानी गई तो 17 दिसंबर में संपूर्ण हड़ताल की जाएगी। आकस्मिक सेवा को छोड़ सारी सेवाएं बंद रहेगी। आज सिविल हॉस्पिटल में सुबह आठ से दस बजे तक डिप्लोमा फार्मासिस्ट एसोसिएशन के कर्मचारियों ने हड़ताल की, जिससे दवाओं के लिए पब्लिक परेशान रहीं।

फोटो : 4पीएम

श्रद्धांजलि | राजधानी में लखनऊ विश्वविद्यालय हॉस्टल के छात्रों ने सीडीएस बिपिन रावत और अन्य सैन्य कर्मियों की शहादत पर आज रैली निकाली। श्रद्धांजलि देकर नमन किया और कहा देश ने सीडीएस रावत को नहीं, एक तरीके से अनमोल रत्न खो दिया।

अब झाड़ू लगाने वाला ही लेगा घरों से कूड़ा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सड़कों की सफाई और घर-घर से कूड़ा एकत्र करने की अलग-अलग व्यवस्था से हो रही परेशानी अब दूर हो जाएगी। आपकी गली में सड़कों व नालियों की सफाई करने वाला कर्मचारी भी घरों से कूड़ा लेगा। फिलहाल नगर निगम पायलट प्रोजेक्ट के तहत आज से दो वार्डों में प्रक्रिया शुरू हो गई है। राममोहन राय वार्ड में घरों से कूड़ा लिया गया।

महापौर संयुक्ता भाटिया और पार्षद के समक्ष इस नई योजना पर चर्चा भी की गई और आज इसे अमलीजामा भी पहनाया गया। नगर आयुक्त अजय कुमार द्विवेदी ने बताया कि अभी तक घरों से कूड़ा मेसर्स ईको ग्रीन के कर्मचारी ही ले रहे थे। कंपनी को शहर के कूड़ा प्रबंधन का काम मिला था लेकिन यह पाया गया कि हर घरों से कूड़ा समय से और नियमित उठ नहीं पा रहा है।

ऐसे में इसमे बदलाव का निर्णय लिया गया, जिससे समय से घरों से कूड़ा एकत्र सके और सड़कों पर गंदगी न दिखाई दे। अब सड़क व नालियों करने वाले सफाई करने वाले नगर निगम के कर्मी यह काम करेंगे। वह घरों से कूड़ा लेकर एक निश्चित जगह पर लेकर उसे रखेंगे, जिससे ईको ग्रीन की गाड़ी से प्लांट में पहुंचाया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस अतिरिक्त कार्य के लिए सफाई कर्मी को प्रोत्साहन राशि भी दी जाएगी। यह राशि मेसर्स ईको ग्रीन को वहन करनी पड़ेगी।

पटरी से उतर रहा सफाई इंतजाम

शहरवासियों का कहना है कि घरों से कूड़ा न उठने से लोगों की नाराजगी बढ़ रही थी और नगर निगम के सफाई कर्मी कूड़ा लेने से मना कर देते थे। इस कारण विवाद भी होता था। दूसरा यह था कि कूड़ा न ले जाने पर लोग उसे खुले में फेंक देते थे, जिससे गंदगी बनी रहती थी। वैसे तो नगर निगम सीमा में 5.60 लाख भवन हैं लेकिन मेसर्स ईको ग्रीन अभी तक डेढ़ लाख घरों से ही कूड़ा ले रही है और वह भी नियमित नहीं हो पा रहा है।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **स्थानीय संपादक** - सूर्यकांत त्रिपाठी*, **विधि सलाहकार:** सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार:** संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट:** हसन जैदी, **दूरभाष:** 0522- 4078371 | **Email:** daily4pm@gmail.com | **website:** www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।